परमेश्वर का हाथ

INDIAN CHURCH OF CHRIST

प्रार्थना पुस्तक जनवरी 2015

परमेश्वर का हाथ

प्यारे भाईयों और बहनों,

आप सभी को नए साल की शुभकामनाएं! जैसे हम सभी इस नए साल के बारे में सोच रहे हैं, हम सभी चाहते हैं कि इसकी शुरूआत अच्छी हो। इस प्रार्थना समय की पुस्तक को जिसका नाम है- 'परमेश्वर का हाथ'- इसे बनाने में शाइजुस ने बड़ी मेहनत की है। जैसे हम प्रति दिन यह डीवोशन करके इस अभियान में भाग लेंगे, तो मैं प्रार्थना करता हूं कि हम परमेश्वर के करीब आएंगे और हमारे विश्वास को बांटते हुए आगे बढ़ेंगे। मेरी प्रार्थना है कि हम सभी पूरे मन से इसमें सहभागी होंगे और एक-दूसरे को ये करने के लिये प्रोत्साहन देंगे।

आओ प्रार्थना करें कि व्यक्तिगत रूप से हम सभी का यह साल धार्मिक्ता में सबसे उत्तम साल हो।

दिनेश जॉर्ज

INDIAN CHURCH OF CHRIST
(FOR IN-HOUSE CIRCULATION ONLY)

परमेश्वर का हाथ (दिसम्बर – 31)

भजन संहिता 8:1-4

परमेश्वर की महिमा आकाश और पृथ्वी दोनों जगह प्रकट है।

हाल ही में यह अनुमान लगाया गया है कि आकाश में 10,000 से 20,000 करोड़ तारामंडल हैं, और हरएक में हजारों करोड़ों तारे हैं। हाल ही में जर्मनी के एक सुपर कम्प्युटर ने इससे भी कहीं अधिक होने का अनुमान लगाया है। 50,000 करोड़। दूसरे शब्दों में कहें तो हर एक तारे के लिये अलग-अलग तारामंडल हो सकता है।

यदि हम अपने आकाशगंगा (जिसे असंख्य तारों की चमकती हुई पंक्ति भी कहते हैं) के तारों को एक-एक करके गीनना शुरु करें तो सारे तारों को गीनने के लिये 2500 वर्ष लग जाएंगे। तो पूरे अकाश के फैलाव का अन्दाज़ा लगाओ।

वचन 3 कहता है, ***जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चन्द्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ;***

यह जानकर कि सम्पूर्ण विश्व हमारे आसमानी पिता के हाथों की रचना है, बहुत ही अच्छा लगता है। तो फिर उनका हाथ कितना बड़ा है? और वे स्वयं कितने शक्तिशाली हैं?

यशायाह 41:10 में परमेश्वर इस्त्राएलियों से कहते हैं,

जिस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ऊंगलियों ने इतने करोड़ों तारागणों को अपने-अपने स्थानों पर स्थिर किया है, उन्हीं हाथों में यदि वह आपको थामे तो! यह कितना अद्‌भुत होगा? तब क्या आपको किसी बात से डरने की आवश्यक्ता होगी?

परमेश्वर के हाथों पर हम अध्ययन की एक श्रृंखला देखने जा रहे हैं। जो हमें हमारे अद्‌भुत सर्वशक्तिमान स्वर्गिक परमेश्वर पर हमारे विश्वास और महान भरोसे को और बढ़ाएगा।

निर्गमन 6:6

इस्त्राएली चार सौ वर्षों तक मिस्रियों के गुलाम थे। यह एक शक्तिशाली राष्ट्र था जो उनका सताव करता था। इस्त्राएली अपने बल बूते पर कभी भी आज़ादी नहीं हो पाते। लेकिन परमेश्वर ने उन पर अनुग्रह किया और दया के कारण उन्हें स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा दी।

परमेश्वर ने इस्त्राएल से प्रतिज्ञा की कि वह उन्हें अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर छुड़ा लेगा।

हम जानते हैं कि उनकी बढ़ी हुई भुजा ने कैसे आश्चर्यकर्म किये और मिस्र में आए 10 महामारी और लाल समुद्र को दो भागों में बाँटकर कैसे उनको बचाया और वाचा की भूमि में उन्हें एक राष्ट्र के रूप में स्थापित किया।

बाद में परमेश्वर उनको यह बात याद दिलाकर कि कोई और परमेश्वर नहीं है उन्हें समझाते हैं।

व्यवस्थाविवरण 4:34, *व्यवस्थाविवरण* 5:15

हम जो हजारों वर्षों के बाद उसी ग्रह पर रह रहे हैं हम सभी के लिये इस बात का क्या मतलब है?

व्यवस्थाविवरण 7:19

वो हमारे लिये क्या करेगा? तेरा प्रभु परमेश्वर उन सब लोगों से भी जिन से तू डरता है ऐसा ही करेगा।

क्या आप यह विश्वास करते हो कि परमेश्वर का हाथ आप पर है? हमारा परमेश्वर भी वही है और हमारे लिये उसका प्रेम भी वही है। हमारे जीवनकाल में भी वह अविश्वसनीय काम करेगा। हमें सिर्फ उसका भय मानना है (उसका भय मानना और उससे प्रेम करना है)

आगे आनेवाले कुछ अध्यायों में हम यह देखेंगे कि जो लोग निर्गमन के बाद जीवित थे उनके जीवन में यह प्रतिज्ञाएँ कैसे पूरी हुईं।

उपयोग: वो कौनसी बातें हैं जिनका सामना करने से हम डरते हैं?
प्रार्थना की एक किताब बनाकर उसमें अपने विचार लिखना आरम्भ करो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 1)

परमेश्वर का हाथ उन सब बातों की पूर्ती करता है जिनकी हमें ज़रूरत है।

व्यवस्थाविवरण 11:1-4

याद रहे कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर अपना प्रेम प्रकट करने और बदले में उनसे प्रेम पाने के लिये अपने शक्तिशाली हाथों और बढ़ाई हुई भुजा से अनेक आश्चर्यजनक चमत्कार किये हैं।

जब इस्राएली लाल समुद्र को पार करके निर्जन प्रदेश में आए वहाँ घटी एक घटना को हम देखेंगे। प्रतिदिन उनके खाने के लिये परमेश्वर स्वर्ग से मन्ना बरसा रहे थे। फिर भी वो नाखुश थे और कुड़कुड़ा रहे थे।

गिनती 11:4-6
उनके इस अकृतज्ञ हृदय और कुड़कुड़ाहट को देखकर परमेश्वर बहुत क्रोधित थे।
और मूसा भी लोगों के इस स्वभाव का भारी बोझ महसूस कर रहा था।

गिनती 11:11-15

तो परमेश्वर ने एक उपाय बताया

गिनती 11:18-23

हालांकि परमेश्वर उनके स्वभाव से क्रोधित थे फिर भी उनको मांस देने का वादा किया।

फिर मूसा को शंका हुई, *व.*21-23

वहाँ दस लाख से भी ज्यादा लोग थे!
मूसा को लगा कि इस विराने में कैसे कोई दस लाख से भी ज्यादा लोगों के लिये मांस का प्रबन्ध कर सकता है!
परमेश्वर यह वादा कर रहे थे कि, ***महीने भर उसे खाते रहोगे!*** परमेश्वर की इच्छा उन्हें एक या दो दिन के लिये मांस देना नहीं था परन्तु पुरे महीने भर के लिये देना चाहते थे।

मूसा को लगा कि यह नामुमकिन है। और इस बात को उसने सरलता से परमेश्वर के सामने रखा। परमेश्वर का जवाब क्या था? 23 ***प्रभु ने मूसा से कहा, क्या प्रभु का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा, कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं।***

वो कौनसी ऐसी बातें हैं जो आपको लगता है कि आपकी ज़रूरत है, और साथ ही यह भी लगता है कि उन बातों को पूरा करना किसी के बस में नहीं है?
क्या आपने किसी चीज़ के लिये प्रार्थना की और फिर यह सोचकर कि यह नामुमकिन है प्रार्थना करना छोड़ दिया?

परमेश्वर के प्रति सबसे बुरा काम जो हम करते हैं वो है उसे तुच्छ जानना।

तुच्छ जानने का अर्थ है, किसी का अनादर करना या ठट्ठा करना।
हम परमेश्वर को तुच्छ कैसे जानते हैं? यह विश्वास करके या किसी के सामने यह कहकर कि परमेश्वर के लिये यह मुमकिन नहीं है! इससे हम यह साबित करते हैं कि परमेश्वर कमज़ोर हैं!!

परमेश्वर ने हमें सृजा है उसकी महिमा करने के लिये, उसे तुच्छ जानने के लिये नहीं।

(यशायाह 43: 5-7 *)*

तो फिर मांस देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा का क्या हुआ?

गिनती 11:31-34

परमेश्वर ने आन्धी चलाई (सारी सृष्टी उसके अधिकार में है) और बटेरों को लाकर उनकी छावनी में बिखेर दिया। और बटेरें छावनी के चारों ओर एक मिटर ऊंचे तक और किसी भी जगह जाने के लिये एक दिन का जो मार्ग है उतनी दूरी तक भर गए व.31। क्या आप इस दृष्य की कल्पना कर सकते हैं?
कल्पना करो कि एक दिन का मार्ग अर्थात् लगभल 46 किलोमिटर की दूरी तक और तीन फीट की ऊंचाई तक (46 कि.मि.x3 फिट)। सौ बटेर अर्थात् कम से कम 25 किलो।
परमेश्वर ने उनके लिये जो बटेर भेजे थे उनको गीनने या तोलने की क्षमता किसी में भी नहीं रही होगी। वह इतना ज्यादा था कि 10 लाख से ज्यादा इस्राएली उसे खा सकें!

तो परमेश्वर का हाथ कितना शक्तिशाली है? अपनी बढ़ाई हुई भुजा से वह एक पूरे राष्ट्र को मांस खिला सकता है।
परन्तु उनको मांस (या जो कुछ उनकी ज़रूरत थी) वह उन्हें देने की परमेश्वर की क्षमता पर शक करने के कारण परमेश्वर ने उन पर भयंकर महामारी लाई और कई लोग मर गए।

शेअरिंग: बहुत वर्षों पहले बंगलूर कलीसिया विश्रान्ती निलायम नामक जगह पर शाम की सर्विस और छोटे गुटों की

मिटींग के लिये एक सभागृह किराए पर लेती थी। बीना और मैं एक समय वहाँ पर मसीहियों को प्रशिक्षण देने का काम कर रहे थे। हमने कुछ सप्ताहों के लिये सप्ताह में तीन दिनों के लिये हॉल बुक किया था। जब भी हम वहाँ जाते तो वहाँ के अधिकारी हमें बहुत तकलीफ देते थे। या तो वो ये कहते थे कि हमने कोई बुकिंग नहीं की है या फिर कॉलेज के कम्पाऊंड में हमें किसी दूसरी जगह हॉल देकर जगह बदल देते थे। क्योंकि अनेक शिष्य शहर के अलग-अलग भागों से काम से लौटकर वहाँ आते तो हमने सोचा कि उनके लिये कॉफी का प्रबन्ध करें और हमने एक फ्लास्क खरीदा और उनके लिये कॉफी लाए। जैसे ही हम वहाँ पहूँचे उन्होंने हम से कहा, कि तुम बाहर की कोई भी खाने-पीने की वस्तु अन्दर नहीं ला सकते। और हमें बहुत दु:ख हुआ। और उसी समय से हम प्रार्थना करने लगे कि परमेश्वर इस प्रकार की सभाओं के लिये सुविधाजनक जगह पर हमारा खुद का हॉल लेने में हमारी मदद कर। हमें याद आया (इफि.3:20 ***अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारे मांगने और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है,*** हम जितना मांगते या कल्पना करते हैं उससे कहीं अधिक देने की क्षमता परमेश्वर में है!

दूसरे ही दिन मैंने एक विज्ञापन पत्रिका खरीदी(फ्री अड्डस/ॲडमॅग) और उसमें व्यावसायिक इमारतें जो बेचनी हैं ढूंढने लगा और वहाँ एक विज्ञापन पर मेरी नज़र पड़ी-शहर के बीचों बीच इमारत का एक हिस्सा बेचना था, कमर्शीयल स्ट्रीट के पास शीवजी नगर बस स्टेशन से यहाँ तक की दूरी बहुत कम थी आराम से चल कर आ सकते थे। उस इमारत का मालिक बहुत ही दयालु था उसने सच में बहुत ही सस्ते में हमें वो जगह दी। आम तौर पर लोग प्रॉपर्टी जैसी हालत में है वैसे ही बेचते हैं। लेकिन यह मालिक नए दरवाज़े लगाने और जिस तरह के बदलाव हम उस जगह में चाहते थे वो सभी अच्छे मटेरियल इस्तेमाल करके, टाईल्स को पॉलिश करके और पूरा पेंटिंग करके वो भी अपने खुद के पैसों से सब करके देने के लिये तैयार था। हमें सबकुछ तैयार मिला सिर्फ हमें कुर्सीयां, परदे और साऊंड सिसटम खरीदना पड़ा।

और कुछ ही दिनों में कलीसिया ने यह जगह खरीद ली। और फिर शाम की सर्वीस और दूसरे कार्यक्रम जिसमें 100 लोग बैठ सकें ऐसे सभी कार्यक्रमों के लिये हम यहाँ मिलने लगे। व्यवसायिक जगह में होने के कारण हमारे गाने या प्रार्थना करने पर कोई रोक टोक नहीं है। अब हमें कोई बाहर नहीं भेज सकता। चाय/कॉफी/खाना आदि बनाने की हमें पूरी आज़ादी है। ***सही में परमेश्वर अपने बढ़ाई हुई भुजा से देते हैं।***

चुनौती: 1.परमेश्वर ने आपके जीवनकाल में जो-जो चीज़ें आपको दी हैं, उनकी सूची बनाओ। उन चीज़ों के लिये उसका धन्यवाद करो। दूसरों के साथ बाँटो कि परमेश्वर कितना अद्भुत है।
2. दूसरी और एक सूची बनाओ उन चीज़ों की जो आप अपने लिये (और कलीसिया के लिये) चाहते हैं।
3. ऐसे 100 चीज़ों को लिखो जिसके लिये आप परमेश्वर के शुक्रगुज़ार हैं।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 2)

परमेश्वर का हाथ जो विश्रामदिन(सबत) के लिये देता है।

परमेश्वर ने सब्बत की स्थापना की-10 आज्ञाओं के द्वारा विश्रामदिन। परमेश्वर चाहते थे कि लोग सप्ताह में कम से कम एक दिन विश्राम करें। जब इस्त्राएलियों को वाचा की भुमि मिली तब भी परमेश्वर चाहते थे कि भूमि को भी हर सातवें वर्ष में विश्राम मिले।
जब परमेश्वर हमें भी आराम करने के लिये कहते हैं तो हमें लगता है कि मैं एक और दिन काम कर लूँ तो मेरे और मेरे परीवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये कुछ और पैसे कमा सकता हूँ!!
जब परमेश्वर हमें विश्राम करने के लिये कहते हैं तो वे यह भी जानते हैं कि उस विश्रामदिन की ज़रूरतों को कैसे पूरा करे। क्या आप यह विश्वास करते हैं कि जब आप परमेश्वर की आज्ञा मानकर विश्राम करें तो परमेश्वर आपकी ज़रूरतों को पूरा करेंगे?

निर्गमन 16 *और व्यवस्थाविवरण* 25 *पढ़ें*

निर्जन प्रदेश में जब इस्राएली 40 वर्ष तक रहे तब हर सुबह परमेश्वर 6 दिनों तक उनके लिये मन्ना बरसाते थे और छठे दिन दो दिन का मन्ना बरसाते ताकि वो उसे पका कर रख सकें और विश्रामदिन के लिये भी उनके पास खाने को हो और विश्रामदिन में उन्हें कोई काम न करना पड़े। परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहे और 40 वर्षों तक उन्हें मन्ना देते रहे।

इतनी सारी प्रतिज्ञाएँ और आज्ञाएँ देने के बाद भी देखो, कुछ इस्राएलियों ने क्या किया।

निर्गमन 16: 27-28

क्या आप आराम करते हा? क्या आपको पता है कि परमेश्वर चाहते हैं कि आप आराम करो? वैज्ञानिकों ने खोज करके यह पाया कि नीन्द हमें ताज़गी देता है और हमारे दिमाग़ को सफाई करने का मौका देता है- जिससे हमारे शरीर को फिर से शक्ति मिलती है।

लैव्यव्यवस्था 25 में परमेश्वर ने उन्हें भूमि के लिये विश्राम वर्ष मनाने की आज्ञा दी। छः वर्षों तक उन्हें खेत बोने की अनुमती थी परन्तु सातवें वर्ष में उन्हें भूमि को विश्राम देने की आज्ञा थी अर्थात् सातवें वर्ष में कोई खेत न बोएगा।

तो प्रश्न उठता है कि सातवें वर्ष में वो अपना निर्वाह कैसे करेंगे? तो परमेश्वर हर वक्त एक महान योजना बनाते हैं जो अवश्व सफल होता है। *लैव्यव्यवस्था* 25:20-22 में परमेश्वर क्या कहते हैं देखो।

क्या परमेश्वर की योजनाएं बढ़िया नहीं हैं?

वैज्ञानिकों ने यह पाया कि फिर से ताज़गी पाए बिना भूमि हर वर्ष उपज पैदा नहीं कर सकती। पौष्टिकता और जीवाणु (विशेष कर नाईट्रोजन पैदा करने वाले जीवाणु) जो बार-बार उपज बोने और काटने की प्रक्रिया के कारण भूमि में से निकल जाते हैं उन्हें फिर से निर्माण होने के लिये कुछ समय की आवश्यक्ता होती है। छः वर्ष तक लगातार भूमि में उपज बोने और काटने के बाद जब सातवें वर्ष भूमि को आराम दिया जाता है तो भूमि को लगने वाले पौष्टिक आहार और सहायक जीवाणुओं को फिर से पनपने का मौका मिलता है। वैज्ञानिकों को इस बात की जानकारी कुछ ही दशक पहले पता चली! लेकिन परमेश्वर ने इस बात की आज्ञा हजारों वर्ष पहले दी।

खेती की उपज के बारे में सबसे बेहतर कौन जानता है? परमेश्वर जिसने भूमि और उपज की सृष्टि की। यदि हम उसकी सुनेंगे तो हमारी भूमि, उपज और जीवन सभी सुरक्षित रहेंगे और सब बातों में हम तृप्त होंगे।

क्या आप परमेश्वर की आज्ञाओं पर भरोसा करते और उन्हें मानते हो? या फिर आप रूके हो उन कारणों के लिये कि जब आपकी ज़रूरतें पूरी होंगी तब ही आप आज्ञापलन करोगे? आओ हम विश्वास और आज्ञापालन करें क्योंकि परमेश्वर ज्ञान में सबसे उत्कृष्ट और विश्वासयोग्य हैं! परिणाम और कारण बाद में सामने आएंगे।

क्या आपको कुछ वचन सही नहीं लगे और आप ने उनका पालन करने से इंकार किया?
उनकी सूचि बनाओ कबूल करो और परमेश्वर के आगे समर्पण करो।(उदाहरण: दशमांश की आज्ञा, प्रतिदिन एक दूसरे को प्रोत्साहन देना, हर मीटिंग में शामिल होना, मार्गदर्शन लेना, कबूली आदि)

उपयोग: जो बात आपका ध्यान भटकाती है उस बात से दूर रहने का प्रयत्न करो। टी.वी., फोन, दूसरे यंत्र। इनकी जगह रोज़ परमेश्वर के वचनों पर मनन करो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 3)

परमेश्वर का हाथ जिसने प्रभु का निवासस्थान बनाया

निर्गमन 35:4 *से निर्गमन* 36:7 *पढ़ें*

जब इस्राएली मिस्र से निकलकर वाचा की भूमि की ओर जा रहे थे तब निर्जन प्रदेश में परमेश्वर ने मूसा को परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाने और उसमें बली चढ़ाने के लिये लगने वाली सारी वस्तुओं का प्रबन्ध करने की आज्ञा दी। मूसा ने सारे लोगों को इकट्ठा किया और परमेश्वर का निवास स्थान बनाने के लिये लोगों को अपनी इच्छा से भेंट देने को कहा। लोगों ने तुरन्त प्रतिक्रिया की और जितना चाहिये था उससे कहीं अधिक लाए।

याद रहे कि यह इस्राएली मिस्र में गुलाम थे-गुलामों के पास कोई कोई सम्पत्ती नहीं होती विशेष रूप से सोना या हीरे जवाहरात जैसी मौल्यवान वस्तु!
फिर भी परमेश्वर ने मौल्यवान और सबसे अच्छी चीज़ों से अपना पवित्र स्थान बनाने की मांग उनसे की। यह कैसे मुमकिन था? परमेश्वर एक प्रवीण योजनाकार हैं और मिस्र देश से बाहर निकलने से पहले ही परमेश्वर ने इस बात की योजना बना ली थी। आओ देखें कि वहाँ क्या हुआ था।

निर्गमन 12:35-36

सभी सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात और सभी मौल्यावान वस्तु जिनकी ज़रूरत थी इस्राएलियों के मिस्र छोड़ने से पहले ही परमेश्वर ने मिस्रियों के द्वारा पूरा कर दिया था। इतनी उदारता के साथ मिस्रियों ने यह सब इसलिये दे दिया था क्योंकि परमेश्वर के द्वारा भेजे उन दस महामारी को वो देख चुके थे और इस्राएल के परमेश्वर से डरने लगे थे और चाहते थे कि इस्राएली शान्ती से जाएं ताकि उनपर और कोइे श्राप न पड़े।

आओ देखें कि परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाने के लिये लगने वाले सामान क्या थे। इसे बनाने के लिये केवल सोना, चाँदी, हीरे जवाहरात ही नहीं परन्तु और भी कई सारी चीज़ों की आवश्यक्ता थी जिनमें बबूल की लकड़ी भी थी।

पहले ही परमेश्वर ने यह तय कर लिया था कि पवित्र स्थान बनाने के लिये जो वस्तुएं लगने वाली हैं वह देने के लिये इस्राएलियों का मन पसीज जाए। यहाँ तक पसीज जाए कि इस उद्देश्य के लिये जितना देना है उससे भी अधिक वे दें। उन्होंने इतना दिया कि आखिरकार मूसा को उन्हें और भेंटवस्तु लाने से रोकना पड़ा।

निर्गमन 35:30-34 *भी पढ़ें*

परमेश्वर ने बसलेल और ओहोलीआब को कलाकृती के काम करने की अद्भुत निपुणता और योग्यता दी और यह भी कि इस विशाल काम को करने में वो लोगों को प्रशिक्षण देकर उनकी मदद ले सकें।

चीन में गए एक महान धर्मप्रचारक हुडसन टैलर ने कहा, "परमेश्वर का काम परमेश्वर के अनुसार करें तो परमेश्वर के पास से किसी भी चीज़ की कमी नहीं होती"

क्या आप यह जानते हैं और मानते हैं कि जो कुछ आपके पास है वह सब परमेश्वर का है?
क्या आप उदारता से अपनी मूल कमाई में से 10% से अधिक, और अपने समय, वरदान, और प्रतिभा का अधिक भाग परमेश्वर को देते हैं?

किस प्रकार आप अधिक दे सकते हैं?
परमेश्वर का राज्य बनाने में आप किस रूप में शामिल हैं?
वो आखिरी समय कब था जब एक आत्मा बचाने में आप शामिल थे?
क्या आप एक अगुवे की पदवी सम्भाल रहे हैं? उससे और ऊंचा उठने के लिये आपको क्या करना पड़ेगा? (यदि आप एक अगुवे नहीं हैं तो एक अगुवे बनने के लिये, या अगुवे हैं तो कैसे और अधिक सेवा करने के लिये?)

उपयोग: परमेश्वर की बुलाहट आपके लिये क्या है? परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिये आपके मन में जो बातें हैं उसे लिखो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 4)
प्रभु तुम्हारी ओर से लड़ेगा

निर्गमन 35:21

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र के दासत्व से निकालकर उन्हें वाचा की भूमि की यात्रा में लाया तो उनको दिन में मार्ग दिखाने के लिये वो एक मेघ के खम्भे में होकर उनके आगे-आगे चला और रात को प्रकाश देने के लिये आग के खम्भे में होकर उनके आगे-आगे चला, ताकि वो रात-दिन दोनों में सफर कर सकें।

कल्पना करो कि यह कितना एक अद्भुत अनुभव रहा होगा!
सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हारे आगे तुम्हारे लिये मार्ग तैयार कर रहा है और रात-दिन तुम्हारी रक्षा कर रहा है!

दिन के समय वह उनके साथ एक मेघ के खम्भे में होकर चल रहा था ताकि उनको मार्ग दिखाए और उस रेगिस्तान की तपती धूप से उन्हें बचाए। और रात में वह एक आग के खम्भे में होकर चल रहा था ताकि उन्हें प्रकाश और गर्मी मिले क्योंकि रात में रेगिस्तान में कड़ाके की सर्दी पड़ती है।

हम शब्दों में बयान नहीं कर सकते कि अपने लोगों का परमेश्वर कैसे ध्यान रखते थे। वह व्यक्तिगत रूप में उनके साथ रहकर उनकी सारी ज़रूरतों को पूरा कर रहा था, ना कि किसी स्वर्गदूत या एजंट के द्वारा-ताकि वह वह साबित कर सके कि वह उनका पिता है!
जब वह उनके साथ था तब वह और क्या कर रहा था?

व्यवस्थाविवरण 1:26-36

दिन-रात उनके साथ रहकर और पिता की तरह उन्हें उठाए चलने के बावजूद, जब परमेश्वर ने उन्हें वाचा की भूमि में प्रवेश करने को कहा तो उन्होंने इनकार कर दिया, क्योंकि अधिकतर जासूस बुरी खबर लाए कि कनान देश के लोग राक्षस के समान हैं और यदि इन राक्षसों के साथ हम युध्द करेंगे तो सबके सब मारे जाएंगे। परमेश्वर दु:खी और क्रोधित थे क्योंकि जो कुछ भी परमेश्वर ने उनके लिये किया था उसके प्रति वे आभारी नहीं थे और यह भरोसा नहीं रख पा रहे थे कि जो भूमि परमेश्वर ने उन्हें देने का वादा किया है वो उन्हें ज़रूर देंगे फिर चाहे वहाँ कोई भी क्यों न रहता हो।

सिर्फ कालेब और यहोशु को विश्वास और भरोसा था।

उनके अविश्वास और विरोध के प्रति परमेश्वर इस अनुछेद में बोलते हैं। परमेश्वर उन्हें स्पष्ट रूप से अपनी योजना क्या थी इसके बारे में बता रहे हैं। वचन 29-30।

परमेश्वर की योजना यह नहीं थी कि उन्हें दानवों के देश में भेजकर उनको पराजय मिले और दानवों द्वारा मार डाले जाएं। वास्तव में उनकी योजना यह थी कि वह स्वयं उनके आगे जाकर उनके लिये युध्द करेंगे। परमेश्वर उन्हें याद दिला रहे हैं कि यह कोई नई बात नहीं है जब से उन्होंने मूसा को उन्हें मिस्र से बाहर निकाल लाने के लिये भेजा है तब से वो यही कर रहे हैं। वो मिस्र में और रेगिस्तान की पूरी यात्रा में हमेशा उनसे आगे जाकर उनके लिये युध्द कर रहे थे।

इस विषय पर कुछ और अनुछेद पढ़ो।

व्यवस्थाविवरण 20:1-4, *यशायाह* 45:2, *यशायाह* 52:12, *यशायाह* 58:8

परमेश्वर का हाथ कितना शक्तिशाली है? यदि वह तुमसे आगे जाकर तुम्हारे लिये लड़ता है तो क्या तुम्हें किसी बात से डरने या असुरक्षित महसूस करने की ज़रूरत है?

एक महान माता-पिता के समान परमेश्वर हमारे साथ है और हमारे लिये रास्ता तैयार कर रहा है ताकि हमें आगे चलकर किसी खतरे का सामना न करना पड़े।
वह एक महान अगुवा है जो हमसे आगे जाकर हमारे लिये मार्ग तैयार करता है कि हम सही मार्ग पर जाएं, और कोमलता और सुरक्षितता के साथ हमारी अगुवाई करता है।
वह एक शक्तिशाली सीपहसालार है जो हमसे आगे रहकर अकेले ही हमारी सब लड़ाई लड़ सकता है।

क्या आप उसे देखते हो? क्या आपको उसकी उपस्थिती महसूस होती है?
इन सारे वर्षों में वह कैसे आपके लिये लड़े, लिखो।
आपके वर्तमान भय और आनेवाले युध्दों के बारे में लिखो।
यह विश्वास करना आरम्भ कर दो कि यह मुश्किलें और लड़ाईयाँ तुम्हारी नहीं है। यह परमेश्वर की लड़ाई है क्योंकि तुम उसके हो और तुम्हें चिन्ता करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है पर विश्वास करो क्योंकि वह अपनी बढ़ाई हुई भुजा और शक्तिशाली हाथों से तुम्हारी रक्षा करेगा!
यदि परमेश्वर तुम्हारे लिये इस तरह से लड़ेगा तो क्या तुम अपनी परिक्षाओं पर विजय पा सकोगे?
अपनी सभी परिक्षाओं को जिन पर विजय पाना तुमको कठीन लगता है लिखो और अपनी सभी लड़ाईयाँ परमेश्वर को सौंपो और मज़बूती से खड़े होकर छुटकारे को देखो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 5)

न्याय करनेवाला परमेश्वर का शक्तिशाली हाथ

परमेश्वर का न्याय सरल है या तो आशिष या श्राप।
व्यवस्थाविवरण 2:7, 14-23
यिर्मयाह 17:5-7

हमारा भरोसा किस पर है यह तय करता है कि परमेश्वर हमें आशिष देंगे या श्राप। इस्राएलियों के साथ यही हुआ - परमेश्वर की बढ़ाई हुई भुजा से अनेक अद्भुत चमत्कार करने और उनको मिस्र के दासत्व से छुड़ाने के बावजूद भी वो ये विश्वास नहीं कर पाए कि वही परमेश्वर अपनी भुजा को बढ़ाकर उस वाचा की भूमि के दानवों से हमारी रक्षा करेगा।
उनके परमेश्वर पर विश्वास न करने के कारण उन्हें परमेश्वर ने श्राप दिया और सभी बुज़ुर्गों को उसी जंगल में मरना पड़ा और उन्हें उस जंगल में 40 वर्षों तक भटकना पड़ा।

वचन 14-15
जब परमेश्वर ने सभी बुज़ुर्गों को जिन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया था, नाश कर डाला तब दूसरी पीढ़ी को वाचा की भूमि में ले जाता है और उनसे कहता है कि वो उनके लिये क्या करनेवाले हैं।

व्यवस्थाविवरण 7:16-26

परमेश्वर कहता है कि कनान के निवासियों को निकाल बाहर करने के लिये बर्रे भेजेगा। बर्रे मधुमक्खि की तरह डंक मारने वाले किड़े हैं जो बहुत बड़े होते हैं।

इसके अलावा *निर्गमन* 23:28 भी कहता है, ***मैं तुझसे पहले बर्रों को भेजूंगा जो हिव्वी, कनानी, और हित्ती लोगों को तेरे सामने से भगा कर दूर कर देंगी।***

यहोशू जब वाचा की भूमि का अधिकांश भाग जीत लेता है उसके बाद भी *यहोशू* 24:11-12 में परमेश्वर कहते हैं।

जब परमेश्वर यह कहते हैं कि, ***मैं तुझसे पहले बर्रों को भेजूंगा*** तो उसका मतलब है कि वह सच में बर्रों को भेजेंगे या फिर आगे लिखे वचन के अनुसार परमेश्वर ने एक दूत को उनके आगे भेजा। जैसे *निर्गमन* 23:27 कहता है, ***जितने लोगों के बीच तू जाएगा उन सब के मन में मैं अपना भय पहले से ऐसा समवा दूंगा, कि उनको व्याकुल कर दूंगा, और मैं तुझे सब शत्रुओं का पीठ दिखाऊंगा।*** जिसके कारण परमेश्वर के शत्रु भाग जाते या फिर खुद को नष्ट कर लेते।

निर्गमन 23:20,23,27

आओ हम पहले *व्यवस्थाविवरण* 2:20-23 पढ़ें।
देखो कैसे परमेश्वर का न्याय करनेवाला हाथ दूसरे राष्ट्रों पर काम करता है।
जमजुम्मि जो अनाकियों के समान बलवान और लम्बे-लम्बे थे। परन्तु परमेश्वर ने अम्मोनियों के हाथों उनका नाश कर दिया और वह जगह अम्मोनियों के वश में कर दिया।

होरियों का नाश एसावियों(एसाव केवंशज) के हाथों हुआ और फिर वे वहाँ रहने लगे।
कप्तोरियों के हाथों अव्वियों का नाश हुआ और वे वहाँ रहने लगे।

परमेश्वर के न्याय से कोई नहीं बच सकता।
1 कुरून्थियों 10:11 में पौलूस कहता है कि पुराने नियम के ये सभी उदाहरण हमें चेतावनी देने के लिये लिखी गईं हैं।

क्या हम उन चेतावनियों को हमारे जीवन में गम्भीरता से ले रहे हैं? क्या हम सचमुच इस बात का ध्यान रख रहे हैं कि उनकी तरह हम न गिरें? परमेश्वर ने हम पर बहुत अनुग्रह बरसाया है और खुद यीशु को क्रूस पर देकर जो अनुग्रह परमेश्वर ने हम पर

दिखाया है, उसके बाद परमेश्वर हम से ये अपेक्षा करते हैं कि उनकी ईच्छा को मानकर हम एक सतर्क जीवन जीयें। ध्यानपूर्वक परमेश्वर के लिये जीना दर्शाता है कि हम सचमुच में उनके अद्भुत अनुग्रह के प्रति आभारी हैं

इब्रानियों 10:26-31 पर मनन करो। और जो पाप आप जानबूझकर कर रहे हैं उनको पहचानो। और वचन 31 को याद कर के पाप कबूल करो और पश्चाताप करो।

जो उत्तर उनको मूसा ने दिया उसमें बहूत गहरा अर्थ है, "डरो मत, खड़े-खड़े वह उध्दार का काम देखो, जो प्रभु आज तुम्हारे लिये करेगा"।
स्थीर रहने का अर्थ यह नहीं कि पुतले की तरह खड़े रहो इसका अर्थ है अपने ज़बान को बन्द रखो या शान्त रहो।

वो अपनी ज़बान से क्या कर रहे थे?
शिकायत, कुड़कुड़ाहट, उनके शब्द मूसा और परमेश्वर के प्रति उनकी शंका और असंतुष्टता को स्पष्ट कर रहे थे।
यीशु ने कहा, "क्योंकि जो हृदय में भरा है, वही उसके मुंह पर आता है।"

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 6)
स्थीर रहो और परमेश्वर के हाथों को काम करते देखो

निर्गमन 14

परमेश्वर ने एक उद्देश्य के साथ इस्राएलियों को मिस्र की शक्तिशाली सेना और लाल समुद्र के बीच दबाया। उनकी एक स्पष्ट योजना थी जो उन्होंने मूसा के सामने प्रकट किया (व.1-4 पढ़ें)।
परन्तु जब इस्राएलियों ने अपनी ओर बढ़ती हुई शक्तिशाली मिस्री सेना को देखा और अपने को मिस्री सेना और लाल समुद्र के बीच फंसा देखा तो उनके असली रंग दिखने लगे। वे मूसा और परमेश्वर के खिलाफ कुड़कुड़ाने और शिकायत करने लगे।

उन्होंने मूसा से कहा *वचन* 11-14

जैसा हमने पहले सीखा कि परमेश्वर की अपेक्षा लोगों से यह है कि वह उसपर पूरा भरोसा रखें। लेकिन हमारी परिक्षाएं हमेशा हमें उस पर शक कराती हैं।
जब हम परमेश्वर की योजनाओं पर सवाल उठाते और परमेश्वर और उनकी योजनाओं पर शक करते हैं, तब हम सिर्फ वर्तमान परिस्थिती को देखते हैं और यह नहीं देखते कि हमें परमेश्वर के शक्तिशाली हाथों ने उठा रखा है औरसब योजना उनके नियंत्रण में है और अन्त में उन्ही की जीत होगी।

ये शक्की इस्राएली पीछे की बातों को देखकर यह कह रहे थे कि परमेश्वर के हाथों से बचाए जाने से अच्छा था मिस्रीयों की गुलामी करना!

क्या आपको कभी ऐसा महसूस हुआ कि मसीही बनने से पहले का आपका जीवन बहुत अच्छा था? हाँ आपको पूरी आज़ादी थी-पाप करने की आज़ादी (जो भी आपको अच्छा लगता या जिस भी बात में आप आनन्द उठाते वो करते)! हाँ हमारे मसीही जीवन की यात्रा में चुनौतियाँ हैं! परन्तु जिस अन्तिम स्थान की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने दी है उसे अपनी दृष्टी से ओझल होने मत दो। वह एक विश्वासयोग्य परमेश्वर है और निश्चय ही अपने हाथों को बढ़ाकर हमें बचाएगा और प्रतिज्ञा की हुई जगह पर हमें ज़रूर पहूँचाएगा क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

मूसा और दूसरे लोग जो शिकायत कर रहे थे उनके स्वभाव में अन्तर देखो। क्योंकि मूसा को परमेश्वर की योजनाओं और हमारी रक्षा करने की क्षमता पर पूरा भरोसा था, चाहे कितनी भी बड़ी मुसिबत आए वह बिलकुल नहीं घबराया परन्तु दूसरे लोग

डर से काँप रहे थे।

ध्यान दो कि मूसा ने उनसे क्या कहा व.13

जीवन में जब कभी हम चुनौती का सामना करते हैं, हमारा यही प्रश्न होता है, "मैं क्या कर सकता हूँ" यहाँ से आप को क्या उत्तर मिलता है?

यशायाह 43:6-7, *लूका* 6:45
उनके मुंह से निकले शब्द यह बता रहे थे कि वो परमेश्वर पर विश्वास नहीं कर रहे!
तो फिर मूसा और परमेश्वर उनसे क्या अपेक्षा कर रहे थे? शान्त रहें (परमेश्वर पर भरोसा रखकर और यह विश्वास करके कि परमेश्वर का शक्तिशाली हाथ उनकी रक्षा करने में समर्थ है) और परमेश्वर के छुटकारे को देखें-और उस छुटकारे का इन्तजार करें।

इसके बाद क्या हुआ?
बहूत ही आश्चर्यपूर्ण और नाटकीय बातें घटी जिसे परमेश्वर के किये चमत्कारों में सबसे आश्चर्यपूर्ण चमत्कार माना जाता है।

निर्गमन 14:15-16

परमेश्वर चाहते थे कि मूसा भी शान्त रहे और इस्राएलियों को आगे बढ़ने में अगुवाई करे। यदि आगे रास्ता दिखाई न देता हो तो भी आगे बढ़ते रहो! यह है विश्वास में चलना! जब हम इस प्रकार के विश्वास के साथ चलते हैं तो परमेश्वर हमारे लिये रास्ते खोल देते हैं जो हमें पहले नहीं दिखाई देते! सच में यह कितना अद्‌भुत है!

वचन 19-22

पहले उसने दूत को आगे से हटाकर पीछे भेजा ताकि वह मिस्री सेना से इस्राएलियों की रक्षा करे। और पूरी रात बादलों के कारण एक तरफ अन्धेरा और दूसरी तरफ उजाला बना रहा। फिर परमेश्वर ने पूर्वी वायु बहाई और समुद्र के पानी को दो भागों में बाँट दिया और हवा इतनी तेज थी कि पानी के हटने के बाद जो गीली और कीचड़दार भूमि थी वह भी सूख गई ताकि इस्राएली चलकर उस समुद्र को पार कर सकें।

इस अनुछेद से आपने क्या सीखा?
जब आप चुनौतियों का सामना करते हैं तब आपकी प्रतिक्रिया क्या होती है?
आपकी अब तक सबसे बड़ी चुनौती और उसका सामना करने में परमेश्वर ने कैसे आपकी मदद की लिखो।

भयंकर परिस्थितियों से परमेश्वर ने लोगों को कैसे छुटकारा दिलाया, लिखो। उनसे आप क्या सीखते हैं?
जब आपके सामने चुनौती होती है तो अपनी ज़बान से आप क्या करते हैं?
इस सीख के बाद इससे आगे आप क्या करेंगे?

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 7)
परमेश्वर का हाथ उत्तम वस्तुएं देता है

व्यवस्थाविवरण 11:10-21

याद है अविश्वासी इस्राएलि लाल समुद्र के पास कैसे कह रहे थे कि अच्छा होता हम मिस्र में ही रहते?

वो शायद इसलिये कि अब तक सबसे अच्छी भूमि जो उन लोगों ने देखा था वो था मिस्र। लेकिन परमेश्वर कह रहे हैं कि जो मैं दे रहा हूँ और जो मैंने अपने शक्तिशाली हाथों से बनाया है वह तुम्हारी कल्पना से कहीं बढ़कर है।

वचन 10-14 में वे दोनों जगहों की तुलना करते हैं।

अपने लोगों से परमेश्वर केवल इतनी अपेक्षा करते हैं कि वो अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करें और विश्वास से उनकी आज्ञाओं का पालन करें। फिर वह तुम्हारी भूमि पर वर्षा के मौसम में वर्षा करेगा, पतझड़ और बहार दोनों मौसमों में, ताकि तुम अपना धान, नया दाखमधु और तेल जमा कर सको।
यह एक प्रतिज्ञा है! और जब तक वे परमेश्वर से प्रेम करते रहे परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की!

क्या आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर ध्यान देते हो?
क्या आप यह विश्वास रखते हो कि जो भी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने दीं वह अपने शक्तिशाली हाथों से उन्हें पूरा करेगा?
या फिर आप शंका करते हो?
जब हम विश्वास करते हैं तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और हम आनन्दित रहते हैं। जब हम परमेश्वर में यह विश्वास नहीं रख पाते कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेंगे तो हम असुरक्षित और चिन्तित रहते हैं!

हालांकि इस्राएली इन प्रतिज्ञाओं के पूरा होने के गवाह रहे, और उस अद्भुत और उत्तम भूमि में रहने का अनुभव लिया, पकी हुई फसल का आनन्द उठाया, बहुत जल्द उन्होंने परमेश्वर का इनकार किया!
और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार परमेश्वर ने स्वर्ग के दरवाज़े बन्द कर दिये और पृथ्वी बंजर हो गई और जिन्होंने परमेश्वर पर भरोसा नहीं रख पाए उनको भयंकर अकाल का सामना करना पड़ा। (1 *राजा* 18 इस प्रकार की एक परिस्थिती का वर्णन करता है)।

आज परमेश्वर हमसे एक ज़मीन का टुकड़ा नहीं परन्तु स्वर्ग में एक अनन्तकाल के घर की प्रतिज्ञा कर रहे हैं। क्या आपको यह विश्वास है कि परमेश्वर इस प्रतिज्ञा को पूरा करेंगे? क्या आपकी आँखें स्वर्ग की ओर लगी हैं?

अब जब कि हम इस पृथ्वी पर हैं और जब तक परमेश्वर से प्रेम और उनपर भरोसा बनाए रखेंगे वह हमारी ज़रूरतों को पूरा करते रहेंगे।

अपने लोगों से परमेश्वर की यही अपेक्षा थी कि वे दूसरे देवताओं के लुभाने में आकर उनकी उपासना न करने लगें। हमारे लिये भी यही चुनौती है।
आप किसकी आराधना कर रहे हैं? क्या हम परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं या फिर इस संसार और उसके आनन्द और वैभव की आराधना कर रहे हैं?

यदि हमारी प्राथमिकता परमेश्वर की सेवा के बजाए पैसा कमाना है तो हम पहले ही मूर्तीपूजा में गिर चुके हैं, हालांकि हम ये दावा कर रहे हैं कि हम आज भी कलीसिया में हैं।

याकूब 4:4 हे व्यभिचारियों और व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानतीं कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से बैर करना है? जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का बैरी बनाता है।

जो मसीही होने का दावा करते थे, परमेश्वर उन्हें *हे व्यभिचारियों और व्यभिचारिणियों* कहकर बुला रहे थे, क्यों? यीशु हमारा दुल्हा है हम उसके दुल्हन हैं! हमारे प्रति अपने प्रेम में वो वचनबध्द और विश्वासयोग्य हैं। लेकिन यदि हम किसी और से प्रेम करते हैं तो यह व्यभिचार है। किसी और से प्रेम करके हम कैसे अविश्वासी और व्यभिचारी बन रहे हैं? यह जगत के साथ हमारी दोस्ती है।
यीशु ने कहा संसार पर शैतान का राज है? क्या संसार आपको आकर्षक लगता है? (*यूहन्ना* 12:31, 14:30, 16:11)

२कुरून्थियों 4:4

मूर्तिपूजा को पुराने नियम में व्यभिचार के रूप में देखा गया है और नए नियम में भी वो कायम है। संसार की सराहना, इच्छा, और संसार से दोस्ती करना परमेश्वर से घृणा करना है।

कौन सी ऐसी लालसाएं हैं जो आपको संसार की और आकर्षित करती हैं? इनके बारे में परमेश्वर को कैसा लगता है? इस प्रकार के आकर्षणों पर आप कैसे विजय पाएंगे?

जिन बातों के कारण आपको लगता है कि आप संसार की ओर आकर्षित होते हैं उन्हें लिखो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 8)

परमेश्वर का हाथ अविश्वासियों पर भय लाता है

हाल ही में आप किन परिक्षाओं से गुज़र रहे थे? आपका स्वभाव कैसा था? डर और समर्पण या साहस और विजय?

याकूब 4:7

लालसाओं का इनकार करके परमेश्वर के हाथ का अनुभव करो और अपनी कमज़ोरी को अपनी शक्ति में बदलो।

व्यवस्थाविवरण 11:25, *व्यवस्थाविवरण* 28:6-10

हालांकि परमेश्वर यह कहते हैं कि इस्राएलियों के सब शत्रु उनसे डरेंगे, वास्तव में वो सर्वशक्तिमान परमेश्वर से डर रहे थे जो उनके साथ था। व्यवस्थाविवरण की ये प्रतिज्ञाएं जब इस्राएली जंगल में ही थे और किसी शत्रु का सामना अब तक उन्होंने नहीं किया था तब ही परमेश्वर ने उनसे कहीं थी और ये सारी प्रतिज्ञाएं पूरी भी कीं।

जब जासूस यरीहो गए थे तब की यह घटना है: राहाब ने उनसे कहा कि जब यरीहो के लोगों को यह पता चला कि परमेश्वर इस्राएलियों के लिये क्या कर रहे हैं तब उनकी हालत क्या हुई।
यहोशू 2:8-11

दूसरी घटना तब की है जब प्रभु ने यरदन नदी पार करने में उनकी मदद की थी।
यहोशू 4:23-24

वचन 24 कहता है यरदन नदी को सुखाने और इस्राएलियों को उसे पार करने में मदद करने के पीछे परमेश्वर का यह उद्देश्य था कि संसार के बाकि सारे लोग यह जान लें कि, ***प्रभु का हाथ बलवन्त है। और तुम सदा अपने प्रभु परमेश्वर का भय मानते रहो।***

यह भी याद रहे कि जब हम परमेश्वर का भय मानते हैं तो लोगों का भय निकल जाता है!

गीदोन के समय की और एक घटना है। इस्राएल बहुत कमज़ोर हो गया था और एक बड़ी सेना ने उनपर आक्रमण कर दिया। परमेश्वर ने इस्राएल की अगुवाई और उस विशाल सेना से लड़कर इस्राएल को बचाने के लिये एक साधारण व्यक्ति गिदोन का उपयोग किया। और परमेश्वर ने उससे यह भी अपेक्षा की कि, वह एक बड़ी सेना लेकर न जाए परन्तु सिर्फ ३०० लोगों को लेकर जाए! गिदोन के डर और असुरक्षितता की कल्पना करो! अन्ततः गिदोन शत्रु की छावनी में गया और आपस में वो जो

बातें कर रहे थे उसे सुना और उसका विश्वास दृढ़ हो गया क्योंकि वह जान गया कि उन लोगों में अपना भय फैलाने का काम पहले ही परमेश्वर के हाथ ने शुरू कर दिया है।

यहोशू 7:12-15

शत्रु सेनिकों की बातों के सुनने के बाद गिदोन की प्रतिक्रिया देखो! यह देखकर कि प्रभु ने कैसे उनमें डर भर दिया,

उसका साहस बढ़ गया, उसने परमेश्वर की आराधना की और शत्रु पर आक्रमण करने में अपने लोगों की बड़ी साहस से अगुवाई की।

रोमियों 8:31-39

हमें सोचने पर मजबूर करने के लिये पौलूस एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछ रहा है- यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

आज हम इस्राएल की तरह युध्द नहीं कर रहे हैं! लेकिन हम एक धार्मिक युध्द में हैं और हमारी यह लड़ाई जीवन भर प्रतिदिन की है। शैतान कोशिश कर रहा है कि हम लालसा में गिरें ताकि वह हमारी आत्मा पर विजय पा सके! पर याद रहे कि हमारे लिये यीशु ने युध्द किया और विजयी भी हुए! तो यीशु जिसने हमसे प्रेम किया उसके द्वारा हम विजयी से भी बढ़कर हैं!

यदि वो सभी आक्रमणकारी सेना यह जानकर कि प्रभु इस्राएल के साथ है डर गए, तो जब वही प्रभु हमारे साथ है तो शैतान हमसे कितना डरेगा?

हाल ही में आप किन परिक्षाओं से गुज़र रहे थे? आपका स्वभाव कैसा था? डर और समर्पण या साहस और विजय?

याकूब 4:7

प्रलोभनों का इनकार करके परमेश्वर के हाथ का अनुभव करो और **अपनी कमज़ोरी को अपनी शक्ति में बदलो**।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 9)

परमेश्वर के हाथ द्वारा आशिषों के प्रति आभार

व्यवस्थाविवरण 26:1-15

वाचा की भूमि पर अधिकार जमाने से पहले यह एक और आज्ञा इस्राएलियों को मिली। परमेश्वर उन्हें यह आज्ञा दे रहे हैं कि जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर उनको ऐसी भूमि दे रहे हैं जिसमें दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं तो उस परमेश्वर के प्रति आभार कैसे प्रकट करें।

उन्हें पवित्र स्थान में पहली उपज लाने और शब्दों से भी अपना आभार प्रकट करने की आज्ञा मिली।

वचन 3-11

उनके आभार प्रदर्शन के इन तीन भागों को देखो।

1. अपने पुराने जीवन और सताव (गुलामी) को याद करना।
2. कैसे प्रभु ने अपने शक्तिशाली हाथों बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा विशाल भय और अद्‌भुत चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा कैसे उन्हें मिस्र से बाहर लाया। (गुलामी से छुटकारा)
3. कैसे परमेश्वर उन्हें इस जगह पर लाए और उनको वह भूमि दि जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं। (महिमा से भरा वर्तमान और भविष्य)

उनसे यह अपेक्षा की गई कि वो अपनी उपज के पहले फल देकर और शब्दों के द्वारा भी परमेश्वर के प्रति आभार प्रकट करें।

क्या परमेश्वर हमसे भी इसी बात की अपेक्षा नहीं करते?

क्या आपको याद है आप कहाँ से आए-आपका पुराना जीवन? कैसे आप पाप के गुलाम थे! वो जीवन कितना आशाहीन था?

आप अपने आप को बचा नहीं पा रहे थे! परमेश्वर ने अपने शक्तिशाली हाथों को बढ़ाकर और अपने एकलौते पुत्र की बली के द्वारा कैसे तुम्हें बचाया!
उसने तुम्हें अपने राज्य में लाकर परमेश्वर का पुत्र कहलाकर अपने परिवार का हिस्सा बनाया!
अब आपके पास उसके राज्य में वो महिमामय जीवन है, और इस पृथ्वी पर के जीवन के बाद आप असली वाचा की भूमि-स्वर्ग में अनन्तकाल के लिये रहेंगे!
क्या इन सभी बातों के लिये आप आभारी हो? क्या आप परमेश्वर पे प्रति आभार प्रकट करते हो? क्या आप अपने उपज के पहले फल और दशमांश और इससे भी अधिक परमेश्वर को देते हो? या फिर आप स्वार्थी होकर और आभारीपन नहीं दिखाते और सबकुछ अपने लिये ही रखते हो?
क्या आप अपने पुराने जीवन, वर्तमान और प्रतिज्ञा किये हुए भविष्य के जीवन को याद करके शब्दों के द्वारा भी आभार प्रकट करते हो?
आओ हम परमेश्वर के हाथों के द्वारा पाए आशिषों के प्रति आभार प्रकट करना सीखें।

यदि हम आभारी न हों तो क्या होगा? परमेश्वर का हाथ जो हम पर है वो हमारे खिलाफ होगा और जब तक हम पश्चाताप न करें हमें रौन्दता जाएगा!

व्यवस्थाविवरण 31:14-23 पढ़ो और देखो कि आभार न माननेवाले इस्राएलियों के प्रति परमेश्वर कैसी दुर्दशा की भविष्यवाणि कर रहे थे? उन्होंने सारे इस्राएल को सीखाने के लिये एक गीत भी दिया जिससे कि वो उन्हें अपना आभार प्रकट न करना याद आए और पश्चाताप करने में उन्हें मदद मिले।
व्यवस्थाविवरण 32 के गीत पर मनन करो।

अपनी कहानी लिखो कि आपका पुराना जीवन कैसा था, परमेश्वर ने आपको कैसे छुटकारा दिलाया और अब तक आपको कौनसी आशिषें दिं और भविष्य में उनसे आपको निश्चय क्या मिलने वाला है। कभी-कभार (समय आप तय करो**) इसे पढ़ो और परमेश्वर का धन्यवाद करो।**

और परमेश्वर के प्रति आभार प्रकट करने के लिये लगातार अधिक से अधिक परमेश्वर को देते रहो, गरीबों और विधवाओं की मदद करो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 10)

परमेश्वर के हाथों के लिये कोई भी दीवार इतनी मजबूत नहीं है

यहोशू 6 यरीहो का पतन

क्या आपको याद है कि परमेश्वर और मूसा के विरोध में इस्राएली कैसे कुड़कुड़ा रहे थे?

व्यवरस्थाविवरण 1:27-28

इस समय भी परमेश्वर ने उन्हें बड़े कोमलता और धीरज के साथ याद दिलाया।
व्यवरस्थाविवरण 1:29-31

परमेश्वर के हाथों के कितने सामर्थी कामों के वो पहले ही गवाह थे? मिस्र के १० महामारी, लाल समुद्र का दो भागों में बँटना, मिस्र की शक्तिशाली सेना का विनाश, हर सुबह स्वर्ग से मन्ना बरसना, पत्थर से पानी का निकलना....इस प्रकार के कई ओर चमत्कार! फिर भी वो इस बात से डर गए कि वाचा की भूमि के चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें हैं।

परमेश्वर उन्हें पहली बार एक ऐसे शहर में ले जा रहे थे जिसमें जाने से वो डर रहे थे!
यहाँ परमेश्वर उन्हें यह बताना चाहते थे कि वो परमेश्वर ही हैं जो उनके लिये लड़ते हैं उस जगह पर काबू करने के लिये उन्हें सिर्फ थोड़ा सा प्रयत्न करना है।

दिवार के चारों ओर सात दिनों तक सिर्फ चक्कर काटना, और सातवें दिन ऊँची आवाज़ में चिल्लाना, और बस परमेश्वर ने उस शक्तिशाली दीवार को जिसे वो कहते थे कि स्वर्ग तक पहुँची है ढा दिया! दीवार किस कारण से गिरी? क्या वह उनके चिल्लाने के कारण? या उनके चक्कर काटने के कारण? या फिर उसपे पीछे परमेश्वर का अजेय हाथ था?

क्या ऐसी कोई दिवार है जिसे ढाना परमेश्वर के लिये बहुत कठीन है?
इस घटना के कई शताब्दियों के बाद, 150 फुट ऊँची दीवार जिसका ऊपरी हिस्सा इतना चौड़ा था कि जहाँ पर ३ रथ अगल-बगल में दौड़ सकते थे,और 1200 मिनारों जब परमेश्वर के लाए हुए ऊफनती हुई नदी की लहरें टकराईं तो वह दीवार ध्वस्त हो गई!

कौनसी दीवारें हैं जिनसे आप डरते हो? आपके शहर के वो कौनसे क्षेत्र हैं जहाँ आपको लगता है कि सुसमाचार वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता?
आपके शहर में लोगों के कौनसे ऐसे गुट हैं जहाँ आपको लगता है कि उन्हें भेदा नहीं जा सकता?
क्या आप कुछ लोगों को यह सोचकर नाकारते हो कि उनका हृदय बहुत कठोर है और वचन उनके हृदय तक नहीं पहुँच सकता? ऐसा करके आप सिर्फ उन लोगों को ही गलत साबित नहीं कर रहे परन्तु परमेश्वर को भी गलत ठहरा रहे हैं! आप यह कह रहे हो कि परमेश्वर बहुत कमज़ोर हैं और इन दिवारों को नहीं गिरा सकते।

ऐसे विचारों से क्या आप परमेश्वर को तुच्छ नहीं जान रहे? परमेश्वर के खिलाफ यह हमारा सबसे ओछा काम होगा! इसके विपरीत यदि हम परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखें और ये विश्वास करें कि किसी भी दिवार को भेदना परमेश्वर के लिये कठीन नहीं, तो परमेश्वर की महिमा और आदर होती है और आपके विश्वास के अनुसार परमेश्वर उसे आपके लिये जीत लेंगे।
ऐसी बातें लिखो जिसके आप गवाह बनना चाहते हो और परमेश्वर से प्रार्थना करो।
और जब परमेश्वर उन दिवारों को ढा देंगे तो उसे लिखो और आने वाली पीढ़ियों को सुनाओ ताकि उनका भी विश्वास आप जैसा ही हो!

साजी अलेक्स के परिवार की कहानी:
हम में से कुछ लोगों ने इस बात का अनुभव किया है कि परम्पराओं, झूठे विश्वास और कटुता आदि की दीवारों को गिरा कर सारे परिवार को मसीह की ओर मोड़ने में परमेश्वर के हाथों ने शक्तिशाली रुप में काम किया है।
इसी प्रकार की एक महान कहानी है साजी अलेक्स के परिवार की: साजी केरला के एक रीतीरिवाज़ी परिवार में बड़ा हुआ। जब वो बड़ा हो रहा था तब उसे और उसके परिवार को बड़े प्रबल चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जब उसने स्कूल की पढ़ाई खत्म की तो उसके पास कोई दिशा नहीं थी कि वो भविष्य में किस ओर बढ़े। वह अपने एक दोस्त के साथ गया जो एक कॅथोलिक मदरसा में प्रवेश पाना चाहता था और इसने भी कॅथोलिक मदरसा में अपना नाम लिखा दिया। विद्यालय में कुछ वर्ष बिताने के बाद उसे एहसास हुआ कि उसे यह सब नहीं करना है और उसने मदरसा छोड़ दिया। बाद में बहुत संघर्ष करने के बाद उसे बंगलूरु में काम मिला और वहाँ उसे कलीसिया का आमंत्रण मिला। पवित्र-शास्त्र अध्ययन से उसे स्पष्ट हुआ कि उसके लिये परमेश्वर की योजना क्या है और वो शिष्य बन गया। लेकिन उसके परिवार से उसे बहोत विरोध सहना पड़ा। क्योंकि वो परिवार में सबसे बड़ा था, उससे यह अपेक्षा थी कि वह काम करे और परिवार का ध्यान रखे। उसकी माँ को यह डर था कि शायद अभी वो परिवार का ध्यान नहीं रखेगा। जब से वो शिष्य बना तबसे उसकी यह इच्छा और प्रार्थना थी कि उसका सारा परिवार उध्दार पाए। उसका भाई सोजन आया और काम करमे उसके साथ रहने लगा और वह भी शिष्य बन गया। 1992 में साजी मिशन टीम के साथ कोचीन चला गया। जल्द ही कोचीन में उसकी बेहन शेजी शिष्य बनी। कोचीन में साजी का विवाह शीबा के साथ हुआ। फिर

उसका भाई बीनु शिष्य बना। साजी अपने बाकी परिवार के उध्दार के लिये प्रार्थना करता रहा और फिर उसका भाई बिजु और उसकी पत्नि सीनिजा घर बनाने के काम में साजी और सोजन का मदद करने के लिये कोचीन आए और उनके साथ रहने लगे और वो भी शिष्य बन गए। इस समय तक यीशु के पीछे चलने की दिलचस्पी उनकी माँ लीलाअम्मा में बढ़ी, लेकिन कुन्नूर में जहाँ वो अपने पती के साथ रहती थी वहाँ कलीसिया नहीं थी। तो सारे परिवार ने प्रार्थना किया और 2012 में कुन्नूर में कलीसिया आरम्भ हुई। साजी की माँ यीशु को जानने के लिये इतनी तत्पर थी कि वह अपने गांव से छः घंटे का बस का (आने-जाने का) सफर तय कर के कलीसिया की सभाओं में आने लगी। सबसे बड़ी चुनौती उसके पिता की थी। वह एक शराबी था। इतने वर्षों में यीशु के पीछे चलने में उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन 2013 में वह बहुत बिमार हुआ और कई दिनों तक आय.सी. यु. में था। इस समय कुन्नूर कलीसिया के शिष्य लगातार उनसे मिलते रहे, उनकी सेवा और प्रार्थना करते रहे। बहुत सारी प्रार्थना और लगातार प्रयत्न करते रहने के बाद साजी के पिता अलेक्जेंडर ने पश्चाप किया और बप्तीस्मा लिया। इन सबके द्वारा उसका परिवार के सदस्य बचाए गए। दूसरी पीढ़ी का परमेश्वर के पास आने का नया अध्याय 2014 में सोजन की बेटी के बप्तिस्मा के साथ आरम्भ हुआ।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 11)

परमेश्वर का हाथ जो स्वर्गिक शरीर ढालता है

यहोशू 10:1-14

एमोरी के पाँच राजाओं ने इस्राएल से युध्द करने के लिये अपनी सेनाओं को एकसाथ जोड़ लिया। वाचा की भूमि में रहते हुए भी कैसे प्रभु के भय और प्रभु ने इस्राएल को आस-पास के देशों के नगरों पर विजय पाने में कैसे मदद की। उनको लगा होगा कि यदि हम सब मिलकर युध्द करें तो शायद जीत जाएंगे।

उस क्षेत्र में रहनेवाले गिबोन के निवासीयों ने बुध्दि से काम लिया और इस्राएल के सामने समर्पण कर दिया, हालांकि उनका शहर अन्य दूसरे शहरों से बहुत महत्वपूर्ण और बड़ा था और उनके सभी पुरूष बहुत अच्छे योध्दा थे।
यहोशू 10:2

एमोरी के पाँच राजाओं ने मिलकर गिबोन पर हमला बोल दिया और गिबोन ने यहोशू से मदद याचना की।
यहोशू उनकी मदद के लिये तैयार हो गया और अपनी सेना को लेकर शत्रु की सेना की ओर बढ़ा।

तुरन्त प्रभु ने यहोशू से बात किया, "*उन से मत डर, क्योंकि मैं ने उनको तेरे हाथों में कर दिया है। उनमें से एक पुरूष भी तेरे सामने टिक न सकेगा।*"
जब भी हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये निकल पड़ते हैं, तो चाहे वह काम कितना ही कठीन क्यों न हो परमेश्वर हमारी ओर से होंगा और अपने शक्तिशाली हाथों से हमें विजयी करेगा।

एक छोटा सा देश इस्राएल थोड़ी सी सेना के साथ कैसे पाँच देशों की सेनाओं से जीत सकता है? यदि परमेश्वर हमारी ओर से लड़ें तो कुछ भी असम्भव नहीं है!
यह यहोशू और उसकी सेना का बल नहीं था जिससे लड़कर वे जीते पर यह काम परमेश्वर के हाथों ने किया।

पहले परमेश्वर ने उनमें ऐसी गड़बड़ी पैदा की, कि कई शत्रु सैनिक अपनी जान बचाकर भागने लगे।
वचन 11

इस्राएल के शत्रुओं से किसने युध्द किया? यही एक समय नहीं था जब परमेश्वर अपने शत्रुओं से लड़ने के लिये प्राकृतिक शक्तियों का उपयोग किया। कैसे परमेश्वर ने प्राकृतिक शक्तियों जो उनके नियंत्रण में हैं उनका उपयोग करके

अपने दुष्ट राष्ट्रों से युध्द कर उनका नाश किया, इसका अध्ययन करो। परमेश्वर के अद्‌भुत तरीकों के लिये उनकी महिमा करो। विश्वास पाओ और परमेश्वर के बचाने वाले हाथों पर भरोसा करो।

कहानी खत्म नहीं हुई। *वचन* 12-15 पढ़ो

परमेश्वर के काम करने का यह एक बहुत ही अद्‌भुत तरीका था-एमोरियों के साथ जो युध्द जारी ही था तब यहोशू को यह एहसासा हुआ कि अपने शत्रुओं पर आक्रमण खत्म करने के लिये और समय चाहिये। और वह सूरज को डूबने में समय लगाने की मांग करता है। यह ऐसी बात है जिसकी कल्पना करने का साहस भी कभी कोई नहीं कर पाएगा। लेकिन यहोशू बहुत अच्छी तरह से यह जानता था कि वह परमेश्वर ही हैं जिनका सारे विश्व पर नियंत्रण है। आओ हम उसकी प्रार्थना को देखें और उससे सीखें-इस्राएल की उपस्थिती में यहोशू पे प्रभु से कहा, "*हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह।*" वो परमेश्वर से यह नहीं कह रहा, कि यदि सम्भव हो तो सूर्य को रोको! परमेश्वर के सामर्थ में उसके विश्वास को देखो।
परमेश्वर यहोशू के विश्वास और जोश से इतना खुश हुए कि उन्होंने दिन को लगभग 12 धंटे तक रोके रखा।

परमेश्वर ने यह कैसे किया? इस बात का वर्णन हम कैसे करें हमें नहीं पता परन्तु एक बात निश्चित है-कि यह घटना घटी थी! ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है किहम एक ऐसे परमेश्वर की आराधना करते हैं जिसका नियंत्रण सारे विश्व पर है! उस पर भरोसा करो और (यहोशू की तरह) पूरे आत्मविश्वास के साथ मांगने का साहस करो ताकि परमेश्वर हमारे तर्कों और कारणों के परे काम करें।

आपके चमत्कार के प्रार्थनाओं को लिखो।
और यह विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल गया(*मरकुस* 11:24)।
जिन प्रार्थनाओं का उत्तर मिला हो उन्हें लिखो और परमेश्वर की महिमा करते हुए दूसरों से बाँटो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 12)

परमेश्वर जो अपने वायदों को पूरा करता है

पिछले कुछ पाठों में हमने परमेश्वर के अनेक प्रतिज्ञाओं के बारे में पढ़ा। वो प्रतिज्ञाएं हमारे लिये बहुत बड़े प्रतीत होते हैं। ऐसी बड़ी प्रतिज्ञां हमें शंका में डाल सकती हैं कि, "क्या परमेश्वर इतना कुछ करेंगे?"
वो जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं अपने जीवन में परमेश्वर के वायदों को पूरा होते देखेंगे।
यहोशू ऐसे बहुत ही कम विश्वासियों में से एक था। जब उसके अगल-बगल के सभी लोगों का परमेश्वर पर से विश्वास उठ गया तब भी वह उस सारी भीड़ के खिलाफ अकेला विश्वास में मजबूत खड़ा रहा और उन अविश्वासियों को चुनौती दि। जिन प्रतिज्ञाओं पर उसने विश्वास किया था परमेश्वर ने उन प्रतिज्ञाओं को पूरा कर उसका प्रतिफल उसे दिया।

परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से इस प्रतिज्ञा के साथ छुड़ाया कि उन्हें वाचा की भूमि कनान में बसाएंगे। जब वे इस्राएलियों के मन में इस हद तक डर उत्पन्न किया कि वे यह विश्वास करने लगे कि कनान देश में रहने वाले दानव रूपी अनाकियों के हाथों वे मारे जाएंगे। और उन्होंने परमेश्वर और मूसा के खिलाफ बलवा किया।

गिनती 14:6-9

यहोशू और कालेब को परमेश्वर पर इतना भरोसा था कि 10 लाख कुड़कुड़ाते और अविश्वासी इस्राएलियों के सामने खड़े होकर प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की परमेश्वर के सामर्थ में अपने विश्वास की घोषणा की।

परमेश्वर यहोशू और कालेब से प्रसन्न था परन्तु अविश्वासियों पर क्रोधित था। फिर परमेश्वर ने उन अविश्वासियों को श्राप दिया और यह निश्चित किया कि वे 40 वर्षों तक उसी रेगिस्तान में भटकते रहें और वहीं मर जाएं। सिर्फ यहोशू और कालेब जिन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया उन्हें ही उस वाचा की भूमि में अपने कदम रखने का मौका मिला।

परमेश्वर ने यहोशू से यह प्रतिज्ञा किया।
यहोशू 3:1-6

इस प्रतिज्ञा का पूरा होना *यहोशू* 11:16-23 में देखो

जिन दानव रूपी अनाकियों से लोग डर रहे थे उनका क्या हुआ? (*गिनती* 13: 31-33)

ना ही सिर्फ यहोशू परन्तु कालेब को भी जिन प्रतिज्ञाओं पर उन्होंने भरोसा किया था उन्हें पूरा होते देखने का परमेश्वर ने आशिष दिया। *यहोशू* 14:12-15।

क्या परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी कीं? आओ इसके बारे में यहोशू ही की गवाही सुनें। *यहोशू* 21:43-45।

क्या आप परमेश्वर के विश्वास योग्य होने और अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के उनके सामर्थ पर विश्वास करते हो?
क्या आपको उनकी प्रतिज्ञाएं याद भी हैं?
इस संसार में रहनेवाले सभी लोगों का एक ही मकसद है खुश रहना! इस संसार में आनन्दित (यह शब्द पवित्र-शास्त्र में खुश रहना इस शब्द से कई अधिक बार लिखा है) रहने का सबसे उत्तम उपाय है परमेश्वर के वायदों को याद रखना, उनपर भरोसा रखना और उन वायदों को पूरा होते देखने की अपेक्षा से इनतज़ार करना।

पवित्र-शास्त्र में दिये परमेश्वर के वायदों का अध्ययन करो।
उनकी एक सूचि बनाओ। देखो कि वो आपके लिये सही हैं और उन्हें पूरा करने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करो। भरोसा करो और उन वायदों को पूरा होते देखने की अपेक्षा के साथ इनतज़ार करो। आनन्द लो और जंगल में कनान देश के बहुत पास थे तब परमेश्वर ने मूसा से वहाँ का भेद जानने के लिये 12 जासूसों को वहाँ भेजने का आदेश दिया। उन्होंने पाया कि सच में उस भूमि में दूध और मधु की धाराएँ बह रही हैं लेकिन उनमें से 10 में यह विश्वास नहीं था कि उस भूमि पर कब्ज़ा करने में परमेश्वर उनकी सहायता करेंगे। सिर्फ यहोशू और कालेब को अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की परमेश्वर की योग्यता पर विश्वास था। उनमें से जो वे 10 जासूस थे उनकी बातों ने सारे इन अचम्भित करने वाली कहानियों को अपने आस-पास के लोगों को सुनाओ। इससे सिर्फ आपको ही आनन्द नहीं मिलेगा परन्तु साथ-साथ परमेश्वर की भी महिमा होगी और यही अन्तिम उद्देश्य भी है।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 13)

परमेश्वर के सामर्थी हाथों को प्रकट करने के लिये कमज़ोरों का चुना जाना

पवित्र-शास्त्र में ध्यान देनेवाली बात यह है कि परमेश्वर हमेशा कमज़ोर और साधारण लोगों को चुनते हैं और अपने सामर्थ से उनसे पराक्रमी काम करवाते हैं ताकि वो महिमा पा सकें।

परमेश्वर के द्वारा छोटे बालक दाऊद का उपयोग दानव रूपी गोलियत को मारकर पलिश्तियों पर विजय पाने के लिये किया गया।
छोटे बालक शमुएल का उपयोग परमेश्वर द्वारा एली और उसके परिवार के बारे में भविष्यवाणी करने और इस्राएल की अगुवाई करने के लिये किया गया।
अधिकतर भविष्यद्वक्ता साधारण लोग थे परन्तु उन्होंने असाधारण भविष्यवाणियाँ कीं और कईयों ने असाधारण चमत्कार।
मूसा बोलने में हकलाता था परन्तु परमेश्वर ने उसी की बातों के उपयोग से शक्तिशाली मिस्री राज्य ने घुटने टिका दिये। सूचि जारी है....(और अधिक जानने के लिये ***इब्रानियों*** 11पढ़ो।)

न्यायियों 6:1-6
इस्राएलियों के पापों के कारण परमेश्वर ने उन्हें मिद्यानियों के वश में कर दिया। व.2-मिद्यानी इस्राएलियों पर प्रबल हो गए। मिद्यनियों के डर के मारे इस्राएलियों ने पहाड़ों के गहिरे खड्डों, और गुफाओं, और किलों को अपने निवासस्थान बना लिये।

मिद्यानियों द्वारा इस्राएलियों को कैसे सताया गया देखो।
जब उन्हें बुरी तरह से रौंदा गया तब उन्होंने परमेश्वर की दुहाई दी और परमेश्वर ने गिदोन को एक छुड़ाने वाले के रूप में भेजा।

न्यायियों 7 पढ़ो
देखो परमेश्वर कैसे काम करते हैं-जब हज़ारों इस्राएली मिद्यानियों से लड़ने के लिये जमा हुए तो परमेश्वर ने उनमें से अधिकतर लोगों को वापस जाने को कहा और अनगिनत मिद्यानि सैनिकों से लड़ने के लिये गिदोन के साथ केवल 300 लोगों को जाने को कहा। उनमें से अधिकतर लोगों को परमेश्वर ने क्यों वापस भेजा? यदि एक भारी सेना मिद्यानियों से लड़कर युध्द जीतती तो लोग उस जीत का श्रेय उस सेना को देते ना कि परमेश्वर को जो उनके लिये लड़े और उन्हें विजयी किया! परमेश्वर महिमा पाना चाहते हैं और इसीलिये उन्होंने यह किया।

कौन यह सोच सकता है कि 300 लोगों की एक छोटी सेना अनगिनत मिद्यानी सेना का सामना करके जीत सकती है? सांसारिक दृष्टी से देखें तो 300 साधारण और कमज़ोर लोगों को लेकर युध्द जीतने की कल्पना भी नहीं की जा सकती!
लेकिन परमेश्वर ने उनसे जो वादा किया उसे याद करो। ***व्यवस्थाविवरण*** 1:29-30।

और यहाँ पर हम यह भी देखते हैं कि कैसे परमेश्वर हमारी कमज़ोरियों को समझते और हमें मजबूत बनाते हैं।

न्यायियों 7:9-16 फिर से पढ़ो। परमेश्वर जानते थे कि गिदोन डरा हुआ है-

देखो परमेश्वर कैसे काम करते हैं-परमेश्वर ने अपने शत्रुओं के दिमाग़ में सपने डाले और उन्हें डर के भागने पर

मजबूर किया! जब गिदोन ने एक मिद्यानी सैनिक को इस सपने के बारे में बात करते और उसका अर्थ बताते सुना तो वह अच्छी तरह से समझ गया कि परमेश्वर इस्राएल को विजय दिलाने के लिये बड़े शक्तिशाली रूप में काम कर रहे हैं और उसने उसी समय वहीं पर परमेश्वर की आराधना की! और इसीसे उसे साहस भी मिला और उसने उन 300 सैनिकों की अगुवाई कर उस विशाल सेना पर विजय पाया! ऐसा प्रतीत होता है..*वचन*22।

देखा परमेश्वर के हाथों ने कैसे काम किया? जब गिदोन के साथ के 300 लोगों ने विश्वास के साथ तुरही फूँकी तब परमेश्वर ने उनके बीच गड़बड़ी फैला दी और वे अपनी तलवार से अपने ही साथियों को मारने लगे और दूसरे घबरा कर भाग गए।

आप किन बातों में गिदोन और उसके लोगों के समान बन रहे हो? क्या आप खुद को कमज़ोर समझते हो? तो फिर इन वचनों से सीखो कि जो अपने आपको कमज़ोर समझते हैं परन्तु शक्तिशाली और सामर्थी परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं, उनके लिये परमेश्वर के पास महान योजनाएं हैं।

सोचो और उन बातों को लिखो जो आपके लिये नामुमकिन लगते थे क्योंकि आपको लगता था कि आप कमज़ोर हो।

(वो ऐसे हो सकते हैं:

मैं डरता हूँ और नहीं जानता कि मेरे दोस्तों, सहकर्मियों और बॉस के साथ मेरे विश्वास को कैसे बाँटूं।

मेरी इच्छा है कि मैं अपने कॉलेज में, काम की जगह पर या अपने घर के पास बाईबल टॉक आरम्भ करूँ, लेकिन मेरे पास ना तो ज्ञान है और न ही साहस।

मैं संगती में इतना कमज़ोर हूँ कि कलीसिया में मेरे ज़्यादा दोस्त नहीं हैं।

मेरा वचनों का ज्ञान इतना कमज़ोर है कि मैं किसी भी गैर-मसीही केसाथ पवित्र-शास्त्र अध्ययन नहीं कर सकता।)

जब मैं इन वाक्यों को लिख रहा हूँ तो मुझे याद आ रहा है कि कैसे परमेश्वर ने मेरी मदद की-शिष्य बनने से पहले मुझे बाइबल का कुछ भी ज्ञान हीं था। जिन भाईयों ने मुझे पवित्र-शास्त्र सीखाया उनके वचनों के ज्ञान को देखकर मैं चकित हुआ और ये बातें मुझे छु गईं। वचन पर किये गए किसी भी प्रश्न का उत्तर वो मुझे देते। बप्तिस्मा लेने के बाद जब मैं उन लोगों के साथ मिलकर नए लोगों के साथ किये जानेवाले पवित्र-शास्त्र अध्ययन में शामिल होने लगा तो मैंने देखा कि केवल बाइबल अध्ययन के द्वारा कई सारे लोग जो कई वर्षों से किसी पाप या लत के गुलाम थे कितनी जल्दी उन पापों और लतों पर विजय पा रहे हैं। मैं सोच रहा था कि यदि मैं भी लोगों के साथ पवित्र-शास्त्र अध्ययन करने के लिये इस तरह से सुसज्जित हो जाऊँ तो कितने और लोग बचाए जा सकते हैं। लेकिन मैं कभी ये कर पाऊँगा ऐसा आत्मविश्वास मुझमें नहीं था। एक कारण यह भी था कि कुछ वर्षों पहले मैं एक बिमारी से त्रस्त था और उसके कारण मेरी स्मरण शक्ति खत्म हो गई थी। इसका मेरी पढ़ाई और मेरे काम पर बहुत गम्भीर असर पड़ा।

फिर मुझे ये एहसास हुआ कि जैसे मेरे देखते हुए परमेश्वर ने मुझे जब इतना बदला, और इतने सारे लोगों को मेरे चारों ओर बान्ध रहे हैं तो मैं स्मरण शक्ति वापस पाने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना क्यों न करूँ। और मुझे यह भी याद आया कि बप्तिस्मा के बाद मैं अकेला नहीं हूँ पवित्र आत्मा का दान मुझे मिला है। फिर मैंने प्रार्थना करना आरम्भ किया और वचनों को याद करने का प्रयत्न करने और लोगों के साथ पवित्र-शास्त्र का अध्ययन करने लगा। और जल्दी ही परमेश्वर ने अद्भुत रीती से मेरे दिमग़ को पहले के मुकाबले बहुत अच्छी तरह से काम करने में मदद की।

पवित्र आत्मा और भाईयों की मदद से मैंने लोगों के साथ पवित्र-शास्त्र का अध्ययन करना शुरू किया और दो महिनों में 100 वचन याद किये! जिनके साथ मैंने पवित्र-शास्त्र का अध्ययन किया उनमें से कई लोगों ने बप्तिस्मा भी लिया। मैं आज भी इस बात को भलीभान्ती जानता हूँ कि मैं आज भी बहुत कमज़ोर हूँ लेकिन यह मेरी योग्यता या सामर्थ नहीं परन्तु यह सही में परमेश्वर का सामर्थ है जो मुझ जैसे कमज़ोर लोगों के द्वारा काम करता है!

गिदोन के उदाहरण से अपना विश्वास बढ़ाओ और प्रार्थना करो कि परमेश्वर तुम्हें मजबूत करे और उन क्षेत्रों में जिसमें आप डरते, कमज़ोर और असहाय महसूस करते हो उन क्षेत्रों में आपको सामर्थ्य के साथ उपयोग करे।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 14)

परमेश्वर का हाथ उन लोगों के लिये काम करता है जो उनकी महिमा करना चाहते हैं

हिजकिय्याह यहूदा का राजा था। याद रहे कि इस्राएल दो राष्ट्रों में बंट चुका था: यहूदा (पश्चिमी राष्ट्र जिसकी राजधानी यरूशलेम थी) और उतरी राज्य इस्राएल (जिसकी राजधानी थी सामरी)।

हिजकिय्याह के शासनकाल के पहले कुछ वर्षों में ही असीरिया ने इस्राएल पर चढ़ाई करके उसका विनाश किया और बहुत से लोगों (निष्कासित इस्राएली) को बन्धुआ बनाकर असीरिया ले गए, इसका वर्णन 1 *राजा* 18 के पहले भाग में किया गया है।

असीरियाई लोग बड़े शक्तिशाली और दुष्ट थे–वो उनकी क्रूरता के लिये जाने जाते थे। जीत के नशे में, वो अब यहूदा पर आक्रमण करते हैं यह सोचकर कि इस छोटे राष्ट्र को जीतना बहुत आसान होगा। लेकिन वो ये नहीं समझ पाए कि यह छोटा सा राष्ट्र एक महान परमेश्वर की आराधना करता है!

2 *राजा* 18:17-19:37 पढ़ो
हिजकिय्याह ने जब असीरियों का पत्र पढ़ा तो उसने क्या किया देखो! वह भयभीत था परन्तु वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण में आया। यह प्रार्थना पढ़ो:

२राजा 19:14-19-हिजकिय्याह को सन्देशवाहकों से पत्र मिला उसने उसे पढ़ो....

असीरियाई लोग ये डींग मार रहे थे कि दूसरे देशों के कोई भी देवता उन्हें उनके राजा के शक्तिशाली हाथों से बचा नहीं सकते! तो वे लोग यहूदा के लोगों को यह कहकर डरा रहे थे कि, जब हिजकिय्याह यह कहे कि, "प्रभु तुम्हें छुड़ाएगा" तो उसकी बातों पर विश्वास मत करना।
लेकिन हिजकिय्याह को पूरी तरह से इस बात की समझ थी कि दूसरे देशों के देवता केवल लकड़ी और पत्थर हैं! वचन 18 पढ़ो।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिसकी हिजकिय्याह आराधना करता था उससे जो निवेदन उसने किया उस पर ध्यान दो: *वचन* 19

हिजकिय्याह की प्रार्थना यह नहीं थी कि परमेश्वर उसके राष्ट्र को उसके फायदे या उसके लोगों के फायदे के लिये बचाए बल्कि परमेश्वर की महिमा के लिये!

ध्यान दो कि उसकी प्रार्थना क्या थी, "*हे हमारे प्रभु परमेश्वर तू हमें उसके हाथ से बचा, कि पृथ्वी के राज्य-राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही प्रभु है।*"

वह चाहता था कि परमेश्वर असीरियाईयों की धमकी पर कार्य करे और उन्हें छुड़ा ले ताकि पृथ्वी के सारे राज्य यह जान लें कि प्रभु ही एक परमेश्वर है!

क्या ये वैसी ही इच्छा नहीं है जो दाऊद ने गोलियत जिससे सारा इस्राएल राष्ट्र डरता था को मारते समय की?

जब कभी भी कोई यह इच्छा व्यक्त करता है कि परमेश्वर के नाम की महिमा हो, तो परमेश्वर इस इच्छा से बहुत खुश होते हैं और जब भी कोई इस इच्छा के साथ प्रार्थना करता है तो परमेश्वर उनकी प्रार्थना का उत्तर अवश्वय देते हैं ताकि उसके नाम की महिमा हो सके।

आपकी प्रार्थना कैसी है? क्या आप अपने फायदे, आराम और महिमा के लिये प्रार्थना करते हैं? या फिर आपकी प्रार्थनाएं सिर्फ परमेश्वर की महिमा के लिये होती है?

मनुष्य को बनाने के परमेश्वर के मूल मकसद को याद करो वह सिर्फ उसकी महिमा के लिये था (*यशायाह* 43:7)। जब हम परमेश्वर की महिमा खोजते हैं तो हमें जिस मकसद के लिये परमेश्वर ने हमें बनाया उस मकसद को हम पूरा करते हैं।

जैसे ही हिजकिय्याह ने यह विश्वास से पूर्ण प्रार्थना किया परमेश्वर ने तुरन्त यशायाह भविष्यद्वक्ता को सन्देश भेजा और यह उस सन्देश का एक महत्वपूर्ण भाग है:2 *राजा* 19:22-23...

परमेश्वर असीरियाईयों से कहता है, अपनी धमकियों से जिसका तुमने अनादर किया है वह हिजकिय्याह या यहूदा देश नहीं परन्तु तुमने स्वर्ग के परमेश्वर का अनादर किया है जिसे वह अधर्म(धर्मनिन्दा) मानते हैं! कोई परमेश्वर की निन्दा करे यह परमेश्वर सह नहीं पाते।

निन्दा, परमेश्वर की महिमा करने के विपरीत है। जो परमेश्वर की निन्दा करते हैं, परमेश्वर उनका नाश करते हैं, और जो उनकी महिमा करते हैं परमेश्वर उनकी रक्षा करते और उन्हें ऊँचा उठाते हैं।

अब उन्होंने अपना हाथ अपनी निन्दा करने वाले-असीरिया के खिलाफ उठाया। देखो परमेश्वर के सामर्थी हाथों ने क्या किया: फिर से पढ़ो 2 *राजा* 19:32-37।

परमेश्वर ने असीरियाईयों के हाथों से यहूदा को छुड़ाने का वादा किया और उसी रात उन्हें छुड़ाया! प्रभु के एक दूत ने 1,85,000 शूरवीर सैनिकों का नाश किया जिन्होंने कई शक्तिशाली राज्यों को जीता था! हीजकिय्याह और उसकी सेना को अपने आप को बचाने के लिये कुछ भी नहीं करना पड़ा- इस शक्तिशाली राज्य पर उन्हें तलवार उठाना नहीं पड़ा।

यह परमेश्वर के सामर्थी हाथों ने कर दिया! कहानी वहाँ खत्म नहीं हुई-यहाँ तक कि राजा सनहेरिब को उसके ही बेटों ने मार डाला-देखो इस काम के लिये परमेश्वर ने जगह कैसे चुना: जब वह अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में आराधना कर रहा था वहीं उसे तलवार से काटा गया।

उसका देवता उसे उसके अब तक के आक्रमणों में के सबसे छोटे राष्ट्र पर विजयी नहीं करा सका और न ही उसके खुद के बच्चों से उसे बचा सका जबकि वह बड़े विश्वास से अपने देवता की आराधना करता था!

क्या आपको अपने प्रभु परमेश्वर पर पूरा भरोसा है?
क्या आप परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ से डरते हो?
क्या परमेश्वर की महिमा आपके जीवन का पहला मकसद है?
क्या आपकी प्रार्थनाओं का मकसद परमेश्वर की महिमा करना है?
हीजकिय्याह की तरह प्रार्थना करना शुरू करो और देखो कि परमेश्वर कैसे काम करते हैं!

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 15)

परमेश्वर का हाथ महान पुनर्जीवन लाता है

2*इतिहास*30

याद रहे कि इस्राएल दो राष्ट्रों में बंट गया था-इस्राएल और यहूदा। इस्राएल के पहले राजा यरोबाम के समय से ही इस्राएल मूर्तीपूजा में बहुत आगे बढ़ गया था। यहूदा पर उन राजाओं का राज्य था जो दाऊद के वंशज थे। अहाज यहूदा का सबसे दुष्ट राजा था। उसने सारे यहूदा राज्य को मूर्तीपूजा और उससे जुड़े दूसरे घृणित कामों में धकेल दिया। लेकिन उसका बेटा हीजकिय्या उससे बिलकुल अलग था। वह परमेश्वर से पूरे मन से प्रेम करता था और उसने यहूदा राज्य में एक महान पुनर्जीवन का काम किया। कैसे परमेश्वर ने उसके प्रयत्नों को आशिष दिया और कैसे लोगों का मन परमेश्वर की ओर मुड़ने लगा था इस बात से वह बहुत आनन्दित था।

हीजकीय्याह के शासन के छठवें साल में, असीरियाईयों के हाथों इस्राएल का विनाश हुआ और अनगिनत इस्राएली मारे गए, कुछ को वे बन्धुवे बनाकर ले गए और कुछ लोगों को वहीं छोड़ दिया। (2*राजा*18:20 कहता है, "इस प्रकार हिजकिय्याह के छठवें वर्ष में सामरी प्रदेश ले लिया गया।") यह इसलिये हुआ क्योंकि इस्राएल ने परमेश्वर को त्याग कर मूर्तीपूजा करना आरम्भ कर दिया था (2*राजा*17)।

कई पीढ़ियों तक यहूदा में भी फसह का पर्व नहीं मनाया जा रहा था। हिजकिय्याह ने फसह का पर्व मनाना आरम्भ करने का निर्णय किया। उसने सारे यहूदा राज्य और पड़ौसी राष्ट्र इस्राएल में बचे हुए लोगों के पास सन्देशवाहक भेजे।

उसकी इच्छा थी कि केवल यहूदा के लोग ही नहीं परन्तु इस्राएल के लोग भी लौटकर परमेश्वर के पास आएं।

देखो लोगों की प्रतिक्रिया क्या थी: 2*इतिहास*30:10-14

इस्राएल के कुछ लोगों ने हिजकिय्याह के सन्देशवाहकों का मज़ाक उड़ाया। लेकिन कुछ इस्राएलयों ने अपने को नम्र किया और फसह का पर्व मनाने के लिये यरूशलेम गए। वचन 12 कहता है, "***और यहूदा में भी परमेश्वर की ऐसी शक्ति हुई, कि वे एक मन होकर, जो आज्ञा राजा और हाकिमों ने प्रभु के वचन के अनुसार दी थी, उसे मानने को तैयार हुए।***"

हिजकिय्याह ने यहूदा और इस्राएल दोनों राष्ट्रों को धार्मिक रूप में पुनर्जीवन देने का मन बना लिया था। परमेश्वर उस प्रयत्न से इतने खुश थे और इसीलिये ***परमेश्वर का हाथ*** लोगों पर पड़ा कि वे एक मन होकर हिजकिय्याह की योजना को पूरा करें।

जिन–जिन लोगों का मन परमेश्वर के हाथों के कारण पसीजा था वे सभी यरूशलेम आए और इस पर्व में भाग लिया और साथ ही साथ यहूदा में सभी मूर्तिपूजा का नाश किया(व.14)। उन्होंने मूर्तीपूजा से छुटकारे और जीवित परमेश्वर की पूरे सच्चे मन से आराधना करने का आनन्द उठाया। (व.21)। उन्होंने पर्व का समय भी बड़ा दिया (व.23)।

परमेश्वर की आराधना में आप कितना समय बिताते हैं? क्या आप अपने पवित्र–शास्त्र अध्ययन और प्रार्थना समय का आनन्द उठाते हैं? क्या आप कलीसिया की सभाओं का आनन्द उठाते हैं? या आपको यह एक बोझ लगता है और बहुत लम्बा समय चला जाता है इसकी आप शिकायत करते हैं? जिन लोगों का मन परमेश्वर की ओर मुड़ा उनके लिये मिलों पैदल चलकर यरूशलेम आना और वहाँ एक सप्ताह तक सभा में शामिल होना उनके लिये कम लग रहा था इसीलिये वे एक सप्ताह और वहाँ रूक कर परमेश्वर की आराधना और संगती में बिताना चाहते थे!

आपके जीवन, आपके परिवार, आपके पारिवारिक गुट और कलीसिया में किस प्रकार के धार्मिक पुनर्जीवन की आवश्यक्ता है? ये लालच, सांसारिक खुशियाँ, अपवित्रता, स्वार्थीपन और घमण्ड आदि जैसी मूर्तीपूजाएं हो सकती हैं। यह आत्माओं को बचाने के लिये एक महान प्रचार का पुनर्जीवन हो सकता है। क्या आप इस पुनर्जीवन को जोर–शोर से आगे बढ़ाने के लिये तैयार हैं? उस अद्‌भुत पुनर्जीवन के प्रयत्न के लिये क्या आप परमेश्वर के हाथों को सामर्थी रूप में काम करते देखने का अनुभव करना चाहते हैं? एक महान पुनर्जीवन की शुरूआत करने के लिये आपको कोई राजा या महान अगुवे होने की आवश्वक्ता नहीं है। यीशु का हमारे लिये एक महानतम् उदाहरण है–उसे पुनर्जीवन के इस काम की शुरुआत करने के लिये संसार में उसे लोगों ने कोई ओहदा नहीं दिया था। अपने आस–पास के लोगों की धार्मिक अवस्था देखकर उसका मन पसीज गया था। *मत्ती*9:35-38।

यीशु ने लोगों की ज़रूरतों को देखा और उसका मन इन खोए हुए लोगों के लिये दया से भर गया। परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वे आपकी आँखों और कानों को खोलें ताकि आप आपके आस–पास के लोगों (जो बचाए गए हैं और जो खोए हुए हैं दोनों और आपके परिवार के लोगों) की ज़रूरतों को देख और सुन पाएं।
उसे लिखकर प्रार्थना और परमेश्वर पर निर्भर होकर तथा समझदार शिष्यों से सलाह लेकर उन ज़रूरतों को परमेश्वर की महिमा के लिये पुनर्जीवन देने के काम को आरम्भ करो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 16)

सिर्फ परमेश्वर की स्तूती के गीत गाकर एक युध्द जीतना

*२इतिहास*20:1-30 *पढ़ो*
मोआबी, अम्मोनी और उनके साथ कुछ मूनियों, इन तीन देशों ने एकसाथ मिलकर यहूदा पर आक्रमण कर दिया। एक छोटी शक्ति वाले छोटे देश के लिये यह एक विशाल सेना थी। उस समय यहोशापात यहूदा का राजा था। वह एक भला राजा था जो परमेश्वर पर विश्वास करता था। उसके पास आत्मसमर्पण करने, या युध्द करके हार स्वीकार करने, या फिर किसी दूसरे देश से सेना की मदद माँगने जैसे चुनाव थे। परन्तु उसने इन में से कुछ नहीं किया और परमेश्वर के सामर्थी हाथों की मदद के लिये परमेश्वर की ओर मुड़ा!

देखो यहोशापात ने कैसे प्रार्थना की: *व.* 12
परमेश्वर ने एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा उसके इस विश्वास से भरे प्रार्थना का उत्तर दिया। *व.*15-17

यहोशापात और यहूदा के लोगों ने परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा पर विश्वास किया हालांकि परमेश्वर ने यह नहीं बताया था कि वो कैसे उनके शत्रुओं का पराजय करेंगे।
क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया-जबकी एक विशाल सेना उनके बहुत करीब थी-पहला काम जो उन्होंने किया वह था परमेश्वर की आराधना करना और उसकी स्तुति के गीत गाना।
देखो अपनी सेना को यहोशापात ने कौनसा सैनिकी मार्गदर्शन दिया जो आक्रमण करती हुई एक विशाल सेना के विरूध्द काम कर गया: ***वचन*** 21-23

देखो कैसे उन्होंने इस लड़ाई को जीता! एक ही काम जो उन्होंने किया वो था परमेश्वर की स्तूति के गीत गाना। जैसे ही उन्होंने स्तुति के गीत गाना शुरु किया तभी प्रभु ने यहूदा पर चढ़ाई करने वाले अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के विरुध्द घातकों को बैठा दिया और उनकी हार हुई। परमेश्वर ने उनमें गड़बड़ी मचाकर उनका विनाश किया और वे आपस में एक दूसरे को मारने लगे!

जब आपके सामने मुसिबतें आती हैं तब आप क्या करते हो? चिन्ता या स्तुति? यदि आप परमेश्वर के पास जाते भी हो तो आपकी प्रार्थना कैसी होती है? शंका के साथ प्रार्थना कि, परमेश्वर यदि आपसे हो सके तो, या फिर आप पूरी तरह से परमेश्वर पर विश्वास रखते हो? ऐसी परिस्थितियों में क्या आप परमेश्वर के वादों को याद रखते हो?

क्या आप परमेश्वर के वादों पर भरोसा रखते हो? वो कौनसे वादे हैं जिन्हें आपने पूरा होते देखा है?
अगली बार आपके सामने जब ऐसी मुसिबतें आएं तब परमेश्वर के वादों पर भरोसा रखकर उनका सामना करो और उसकी स्तुति के गीत गाओ और देखो कि परमेश्वर कैसे सामर्थ से काम करते हैं।

आज का काम: परमेश्वर के गीत गाओ और अपनी सारी चिन्ताएं परमेश्वर पर डालो और अपने मार्गदर्शक और दूसरे शिष्यों के साथ अपनी चुनौतियों को बांटो और उनसे भी आपके लिये प्रार्थना करने के लिये कहो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 17)

आपकी कहानी और आपके जीवन में परमेश्वर का हाथ

भजन संहिता 118
भजन संहिता लिखने वाले अनेक भजनकारों ने अपने अनुभव के अनुसार भजन लिखा है।
अपनी कहानी लिखो-कैसे परमेश्वर के हाथों ने आपके जीवन में काम किया?
आप कैसे बचाए गए?
आपके जीवन में परमेश्वर ने दूसरे कौनसे चमत्कार किये?
लिखो और देखो कि परमेश्वर के अनदेखे हाथ ने आपके जीवन में कैसे काम किये; और परमेश्वर की स्तुति करो।
आप के वर्तमान बोझों को लिखो और देखो कि जिस परमेश्वर ने आपको पहले मुसिबतों से बचाया है वही परमेश्वर कैसे आपको इन परिस्थितियों से आज भी विजय दिला सकता है।

आने वाले विजयों के लिये उसकी स्तुति करो और शान्ती से जीयो।
मरकुस 11:24 ***इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ, जो कुछ तुम प्रार्थना में मांगो, तो विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल गया, और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।***

आज का काम: आपके जीवन में परमेश्वर ने कैसे काम किया यह कहानी दो गैर-मसीहियों के साथ बांटो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 18)

परमेश्वर का हाथ उनकी ज़रूरतों को पूरा करता है जो उसकी सेवा करते हैं

कई बार लोग यह सोचकर परमेश्वर की सेवा करने से अपने आपको रोक लेते हैं कि इसमें बहुत त्याग करना पड़ेगा और यदि हम परमेश्वर की सेवा करेंगे तो हमारी ज़रूरतें पूरी नहीं हो पाऐंगी।

एलिय्याह परमेश्वर का महान सेवक था। उसे सबसे बड़े विरोधी देश इस्राएल में रहकर अपना कार्य करना था! यह राजाओं का समय था। इस्राएल दो देशों में बंट चुका था, उत्तरी राज्य-इस्राएल और दक्षिणी राज्य-यहूदा।

राज्यों के गढ़ने के समय से ही इस्राएल ने परमेश्वर को छोड़ दिया और मूर्तिपूजा में लग गए। (जिसकी शुरूआत हुई बेथेल और डान में बच्छड़े की पूजा के साथ जिसे पहले राजा यारोबाम ने शुरू किया था)

इस्राएल में जितने शासक हुए उनमें सबसे दुष्ट था अहाब जो अपनी पत्नी ईजेबेल जो पवित्र-शास्त्र में लिखी स्त्रियों में से शायद सबसे दुष्ट स्त्री है, उसकी सलाह पर राज्य करता था।

ईजेबेल इस्राएल के लोगों को बाल देवता की उपासना में धकेल रही थी और हाथ धोकर परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं को मारने में लगी थी!

ऐसे भयानक समय में एलिय्याह को परमेश्वर ने ऐसे परमेश्वर रहित देश में लोगों को परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिये भेजा।

व्यवस्थाविवरण 32 यह कहता है कि जो परमेश्वर को छोड़ मूर्तिपूजा करेंगे तो परमेश्वर उनके साथ क्या करेंगे। एक सज़ा जिसकी भविष्यवाणी की गई थी वह थी कि वह भूमि अकाल से पीड़ित होगी!

1 *राजा* 17:1-6

क्योंकि मूर्तिपूजा के कारण परमेश्वर उसके लोगों से क्रोधित था; उसने एलिय्याह से कहा कि वहाँ तीन वर्षों तक वर्षा नहीं होगी!
क्या परमेश्वर धार्मिक और अधार्मिक दोनों को एकसाथ सज़ा देगा?
तो परमेश्वर के पास एलिय्याह का ध्यान रखने के लिये एक योजना थी-यह पूर्वनिश्चित योजना नहीं थी। परमेश्वर ने उसे एक झरने के पास भेजा ताकि वो उस झरने का पानी पी सके और प्रतिदिन सुबह और शाम में कौवे उसके पास रोटी और मांस लाते थे! किसने उसे पकाया और कहाँ से कौवों ने लाया? हमें नहीं पता-परन्तु परमेश्वर का हाथ जिसने दुष्टों को सज़ा दिया उसीने जो परमेश्वर के पीछे चलते थे उनको आशिष दिया! हमारा परमेश्वर न्यायी परमेश्वर है-वह उनकी सुधि लेगा जो विश्वास से उसकी सेवा करके हैं।

ऐसे समय पर परमेश्वर ने सिर्फ एलिय्याह का ही ध्यान नहीं रखा परन्तु इस्राएल के सारे विश्वासियों और दूसरे सभी नबियों का भी ध्यान रखा।

1 *राजा* 18:4 ***जब ईजेबेल प्रभु के नबियों को नाश करती थी, तब ओबाद्याह ने एक सौ नबियों को लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा; और अन्न-जल देकर उनका पालन-पोषण किया करता था।***

क्या ऐसा कोई कारण है कि जिसके कारण आप परमेश्वर की सेवा करने से अपने को रोके रखे हो?
क्या आप सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर यह विश्वास करने के लिये तैयार हो कि यदि आप उनकी सेवा करें तो वे आपका ध्यान रखेंगे?

आपको और आपके परिवार को जो आशिषें परमेश्वर ने दीं हैं उन आशिषों के लिये और जिस तरह से उन्होंने आपका और आपके परिवार का ध्यान रखा है उसके लिये उनकी स्तुति करो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 19)

परमेश्वर का हाथ उन लागों के लिये सामर्थ से काम करता है जो अपना पहला उन्हें देते हैं

1 *राजा* 17:7-24

जैसा हमने पहले पढ़ा कि अकाल के समय परमेश्वर ने एलिय्याह के लिये झरने का पानी और कौवों के द्वारा मांस और रोटी का प्रबन्ध किया।
कुछ समय के बाद झरना सूख गया और वचन 9 में परमेश्वर ने उससे कहा, 9 "*कि, चलकर सीदोन के सारपत नगर में जाकर वहीं रह। सुन मैंने वहाँ एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है।*"

हमेशा की तरह एलिय्याह ने परमेश्वर की बात मानी और उस विधवा को जो उसे भोजन देने वाली थी ढूंढते हुए सारपत नगर चला गया।
उस विधवा के जीवन की परिस्थिती बताती है कि उस समय इस्राएल में सारे लोगों पर क्या गुज़र रही थी। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का इनकार किया और मूर्तियों की उपासना करने लगे, तो परमेश्वर ने उस भूमि पर जहाँ कभी दूध और मधु की धाराएँ बहती थीं अकाल लाया।

लोग शायद मर रहे होंगे। इस विधवा और उसका एकलौता बेटा भी अपनी आखिरी रोटी बनाने की तैयारी में थे और उन्हें कोई आशा नहीं थी कि वे बच पाएंगे। ***वचन*** 12 के उसके शब्दों से हम यह पता चलता है कि अपने बेटे के साथ अपना आखिरी खाना खाने के बाद वो और कुछ नहीं सिर्फ मौत का इनतज़ार कर रही थी।

और इसी समय एलिय्याह इस दृष्य में आता है और उससे पीने के लिये एक लोटा पानी मांगता है। जैसे ही वो पानी लेने के लिये जाती है वह और एक बिनती करता है, "*मेरे लिये एक टुकड़ा रोटी भी ले आ*" (***व.*** 11)। तब वो उसेअपनी पीड़ा बताती है, जो हमने पहले देखा।

फिर एलिय्याह भविष्यवाणी करता है; ***वचन*** 13-16।

यह गरीब विधवा परमेश्वर पर इतना भरोसा करती थी कि उसने तुरन्त एलिय्याह की बात मानी और तब से लेकर अकाल के खत्म होने तक परमेश्वर ने उसको और उसके बेटे को आशिष देकर उनकी पूरी तरह से देखभाल की।

परमेश्वर में तुम्हारे विश्वास और भरोसे की परीक्षा कैसे होती है?
जब आपकी परीक्षा होती है तब आपकी प्रतिक्रिया क्या होती है?

आप शंका करते हो या विश्वास?

परमेश्वर को दशमांश/भेंट देने के बारे में क्या? कमाई मिलने के बाद क्या वह आपका पहला काम होता है? या फिर आप पहले ये देखते हो कि आपके खर्चे क्या हैं और फिर बाद में परमेश्वर को देने की सोचते हैं, बचा-कुचा?

शैतान हमेशा हमें भविष्य के प्रति चिन्तित और असुरक्षित रखने की चाह से हमें ये महसूस कराता है कि, 'मुझे खुद मेरा ध्यान रखना है, कोई और मेरा ध्यान नहीं रखेगा, परमेश्वर और कलीसिया दोनों ही स्वार्थी हैं, वो हमेशा मुझसे ज्यादा और ज्यादा ही मांगते रहते हैं।'

यह विधवा एलिय्याह के बारे में ऐसा सोच सकती थी कि कितना स्वार्थी इन्सान है, देखो वो क्या कहता है, "पहले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना।" पहले उसे चाहिये-वो ये नहीं कह रहा कि-बनाकर पहले तुम और तुम्हारा बेटा खाओ और फिर बचा हुआ मुझे दो!

क्या परमेश्वर की आपसे यह अपेक्षा कि, उसे पहला और उत्तम दो, गलत है?
वे स्वार्थी नहीं हैं और आप यदि कुछ ना भी दें तौभी परमेश्वर जीवित रह सकते हैं। आपके अस्तित्व में आने से पहले से वे हैं और तब से उनका पूरा ध्यान रखा जा रहा था। परन्तु वह चाहते हैं कि आपकी भलाई के लिये आप पहले उन्हें दो। क्योंकि वो जानते हैं कि अनन्तकाल तक का आपका पूरा जीवन निर्भर करता है पूरे दिल से परमेश्वर को प्रेम करने और पहला स्थान उन्हें देने पर।

यह भी ध्यान दो कि एलिय्याह के इस विधवा के परिवार के साथ रहने के दिनों में ही एक और चमत्कार हुआ। उसका एकलौता बेटा मर गया और उस पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।
एलिय्याह को भी उस बच्चे के मरने का उतना ही दुःख हुआ वह उसे अपने हाथों में उठाए ऊपर अपने कमरे में ले गया और परमेश्वर को ऊँचे स्वर में तीन बार पुकारा और परमेश्वर ने उस बच्चे को फिर से जिलाया। इससे वह विधवा यह जान गई कि एलिय्याह सच में परमेश्वर का नबी है और वह परमेश्वर का वचन ही बोलता है!

यिर्मयाह 17:5-9 पढ़ो और देखो कि परमेश्वर के आशिष और श्राप हमारा भरोसा कहाँ है इस बात पर निर्भर होता है।!

क्या आप परमेश्वर को पहला स्थान दे रहे हैं?
जब आप समझौता करते और पहला स्थान परमेश्वर को नहीं देते तब आपके बहाने क्या होते हैं?
क्या आप अपनी कमाई से पहला और उत्तम आप परमेश्वर को देते हो?
आपके जीवन में चुनौतियाँ आने के बाद भी क्या आप ऐसा ही करोगे?
याद रहे कि इस विधवा की तरह शायद हममें से किसी पर भी ऐसी चुनौती नहीं आएगी, फिर भी उसने परमेश्वर को पहला स्थान दिया (उसके नबी को पहला स्थान देकर)!
जिस तरह से परमेश्वर आपकी ज़रूरतों को पूरा कर रहे हैं क्या उसके द्वारा आपको परमेश्वर की विश्वसनियता का अनुभव हुआ? उन अनुभवों को लिखो और परमेश्वर की स्तुति करो।
एक संकल्प बनाओ कि पहले परमेश्वर को देने में आप कभी समझौता नहीं करेंगे।

आज का काम: अपना दशमांश देने का निर्णय बनाओ। अपने को रोके न रहो। अपने नए प्रतिज्ञा के बारे में बताओ।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 20)

परमेश्वर का हाथ जिसने देश को सच्चे परमेश्वर की ओर मोड़ा

1 *राजा* 18:16-46

अहाब और ईजेबेल के शासनकाल में इस्राएल की धार्मिक परिस्थिती सबसे कमज़ोर थी।
परमेश्वर ने देश को परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिये एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को भेजा।
ईजेबेल सारे देश को कनान के बाल और अशेरा जैसे अन्य देवताओं की उपासना की ओर मोड़ने में सफलता पाई।
ईजेबेल के यहाँ बाल के चार सौ पचास और अशेरा के चार सौ भविष्यद्वक्ता थे जो उसकी मेज पर भोजन करते थे!

उन्होंने प्रभु को त्याग दिया यह देखकर एलिय्याह परेशान हो चुका था। *वचन* 21 में वह देश को चुनौती देता है।
*व.*21 और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, "*तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे? यदि प्रभु परमेश्वर है, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल है, तो उसके पीछे चलो।*"

इस बात के लिये एलिय्याह का प्रस्ताव ये था कि, दोनों अन्य देवताओं के भविष्यद्वक्ता और एलिय्याह, अपने-अपने परमेश्वर को चढ़ाने के लिये भेंट लाएं और वह भेंट परमेश्वर को आग से ग्रहण करने को कहें। जो भी देवता उसे आग से ग्रहण करेगा वही सच्चा परमेश्वर होगा। एलियाह निश्चित था कि उनके देवताओं में स्वर्ग से आग बरसाने की बिलकुल शक्ति नहीं है और इस बात से भी निश्चित था कि स्वर्गिक प्रभु जिसकी वह आराधना करता है वह सच्चा परमेश्वर है और आग बरसाकर उसकी प्रार्थना का उत्तर देगा।

झूठे देवताओं के भविष्यद्वक्ता घंटों तक प्रार्थना करते रहे, स्वयं को घायल करते और उछलते-कूदते रहे परन्तु उनके देवताओं ने आग के द्वारा उत्तर नहीं दिया!

एलिय्याह ने बड़े साहस से उनका ठट्ठा उड़ाया: *वचन* 27-28।

अन्ततः एलिय्याह ने प्रभु की वेदी की मरम्मत की और उसपर अपना भेंट रख और एक अचम्भित करने वाला काम किया-उसने वेदी के चारों ओर इतना गहरा गड्ढा खोदा कि जिसमें 14 लिटर से भी ज्यादा पानी समा सके, और उसने लोगों से भेंट पर, वेदी पर पानी डालने को कहा और इतना पानी उंडेला गया कि वह गड्ढा भी पानी से भर गया। (*वचन* 32-39 पढ़ो)

यह अस्वभाविक था, क्योंकि हम जानते हैं, यदि किसी चीज़ को जलाना है तो उसमें पानी नहीं होना चाहिये! परन्तु एलिय्याह परमेश्वर के द्वारा भेजे जाने वाले आग की शक्ति के प्रति निश्चित था और चाहता था कि इसे देखकर लोग अचम्भा करें और परमेश्वर की ओर अपना मन फिराएं।

आओ हम इस घटना का सबसे बढ़िया भाग पढ़ें: *वचन* 37-39।

दूसरे देवताओं के लोग घंटो तक प्रार्थना करते रहे परन्तु वे देवता थे ही नहीं कि उनकी प्रार्थना का उत्तर देते! परन्तु यहाँ एलिय्याह पूरी भक्ति के साथ केवल एक बार प्रार्थना करता है और सबसे ज्यादा अचम्भित करने वाली बात हो जाती है-प्रभु की अग्नि गिरी और सारी भेंट, लकड़ी, पत्थर, और भूमि को जला दिया और यहाँ तक कि गड्ढे में का पानी भी सूख गया!

अपनी आँखें बन्द करके इस दृष्य की कल्पना करो-यह पवित्र शास्त्र की एक सबसे नाटकीय घटना है-और इसका नतीजा देखो- ***वचन*** 39 कहता है, ***यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, "प्रभु ही परमेश्वर है, प्रभु ही परमेश्वर है!"***

उन लोगों को प्रभु का स्वीकार करने के लिये एलिय्याह को कोई भी प्रचार नहीं करना पड़ा लेकिन इस घटना को अपनी आँखों से देखकर वे परमेश्वर की आराधना में मुंह के बल गिरे और पुकार उठे, "***प्रभु ही परमेश्वर है, प्रभु ही परमेश्वर है!***"

यह लोग जो बाल देवता के नबियों का आदर करते थे उन्होंने एलिय्याह की आज्ञा का सिर्फ पालन ही नहीं किया पर उन लोगों को पकड़कर किशोन की तराई में ले जाकर मार डाला।

देखो सारे राष्ट्र के लोगों का मन परमेश्वर की ओर फेरने के लिये परमेश्वर के हाथ ने कैसे शक्तिशाली रूप में काम किया!
हम जिसकी आराधना करते हैं, वो कितना अद्‌भुत परमेश्वर है।

एलिय्याह की तरह क्या आपका विश्वास भी समझौता न करने वाला और परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखने वाला विश्वास है या फिर इस्राएल के लोगों की तरह जिनका विश्वास सच्चे और झूठे देवताओं के बीच डगमगा रहा है?
मुसिबतों के समय आप कहाँ शरण लेते हैं? संसार में, धन, मनुष्यों, खुद में या फिर जीवित परमेश्वर में? क्या आप अपने परमेश्वर से पूरे मन, बुध्दि और आत्मा से प्रेम करते हो?
यदि ऐसी कोई बात है जिसके कारण आप परमेश्वर के प्रति पूरे मन से वचनबद्ध नहीं हो तो, आज पूरे मन से उनके प्रति वचनबद्ध हो! किसी भी चीज़ को आपको परमेश्वर से दूर ले जाने का मौका मत दो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी - 21)

हमारे कठीन से कठीन काम भी परमेश्वर के लिये बडे आसान हैं

2 राजा 3

इस्राएल ने मोआब के विरूध्द युध्द छेड़ दिया।
इस्राएल के राजा यहोराम ने यहूदा के राजा यहोशापात और एदोम के राजा की मदद मांगी।
सात दिनों तक चलने के बाद उनके पीने का पानी खत्म हो गया और वे जान गए कि अब वे मोआबियों की तलवार से नहीं परन्तु प्यास से मारे जाएंगे!

यहोशापात जो परमेश्वर पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति था परमेश्वर से मार्गदर्शन और मदद मांगना चाहा।

क्या हुआ यह पढ़ो: ***वचन*** 11-12

जैसा कि हम जानते हैं कि इस्राएल पीढ़ियों से परमेश्वर को त्यागकर केवल मूर्तिपूजा करते थे! जबकि परमेश्वर ने एलिय्याह और एलीशा जैसे नबी भेजे फिर भी उन्होंने पूरी तरह मूर्तिपूजा करना न छोड़ा! यहोशापात प्रभु का भय मानता था सिर्फ इसी कारण से एलीशा उनकी ओर से परमेश्वर से पूछने को तैयार हुआ।

तो उसने एक वीणा बजानेवाले को बुलाने को कहा। ***वचन*** 16-20।
यह बहुत दिलचस्प बात है कि बार-बार, 'प्रभु का आत्मा नबी पर उतरा' और 'परपेश्वर का वचन नबी के पास आया' जैसे वाक्यों के बजाए यहाँ ***वचन*** 15 कहता है 'प्रभु का हाथ एलीशा पर पड़ा।' "(जब वीणावादक ने वीणा बजाई तब प्रभु की शक्ति एलीशा पर उतरी)"

फिर एलीशा ने भविष्यवाणी की कि हवा नहीं बहेगी और न बारिश होगी फिर भी परमेश्वर उस तराई को भर देगा! ताकि सारे सैनिक और उनके पशु अपनी प्यास बुझा सकें। ***वचन*** 18 कहता है प्रभु की नज़रों में यह एक आसान काम है।

हम ऐसे बातों के घटने की कल्पना भी नहीं कर सकते-बिना बरसात, बिना कुआं खोदे, अचानक पूरी तराई पानी से भर जाए! लेकिन इस प्रकार के अविश्वसनीय बात 'प्रभु के लिये हल्की सी बात है'!

परमेश्वर ने यह भी भविष्यवाणी की कि वे मोआबियों को उनके हाथों में कर देंगे।

एलीशा के द्वारा परमेश्वर ने जो भी वादा किया वो पूरा हुआ और मोआब की घमण्डी सेना हार गई!

परमेश्वर के हाथों के लिये कुछ भी हासिल करना कोई मुश्किल काम नहीं है!

आपके वो कौनसे आत्मिक इच्छा हैं जो पूरे नहीं हुए?
क्या आपको लगता है कि उन्हें पूरा करना परमेश्वर के लिये कठीन है?
आपकी नज़रों में आज सबसे मुश्किल/नामुमकिन बात क्या है?
क्या आपको लगता है कि यह परमेश्वर के लिये बहुत मुश्किल काम है या फिर यह विश्वास करते हो कि यह 'परमेश्वर के लिये एक हल्की सी बात है?'

आपके लिये जो सबसे मुश्किल बातें हैं जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते ऐसी बातों की सूची बनाकर परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वे काम 'परमेश्वर के लिये एक हल्की सी बात है' यह विश्वास करने में आप यकीन कर पाओ!
नए विश्वास के साथ प्रार्थना करो कि परमेश्वर का हाथ उन बातों पर हावी हो जिससे परमेश्वर को महिमा मिले! इस प्रकार की बातों पर परमेश्वर के विजय को देखो-परमेश्वर की स्तुति करो और परमेश्वर के हाथों के काम दूसरों के साथ बांटो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी - 22)

जब परमेश्वर का हाथ उसपर काम करता है जो हमारे पास कम है

2राजा 4:1-7

परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता की यह गरीब विधवा बड़े मुसिबत में थी। उसके पती ने मरने से पहले बहुत सारा कर्ज़ लिया था।
अब कर्ज़दार उसके बदले उसके दो बेटों को दास बनाकर रखने के लिये ले जा रहा था!
इस्राएल में जहाँ लोग परमेश्वर दूर हो गए थे इस प्रकार की बातें आम थीं!

वह मदद के लिये नबी एलीशा के पास जाती है।
एलीशा उससे कहता है कि, "मुझ से कह कि तेरे घर में क्या है?" वह कहती है, "एक हांडी तेल को छोड़कर और कुछ भी नहीं है।"

मनुष्यों की सोचें तो उसके घर में पड़े उस थोड़े से तेल से वह क्या कर सकती थी? कुछ भी नहीं!
लेकिन वो थोड़ा सा तेल जो आपके पास है वो यदि आप परमेश्वर के हाथों में दोगे तो-हम कभी जान नहीं पाएंगे कि वह कितना बढ़ जाएगा।

एलीशा उससे पड़ौसियों से खाली बर्तन लाने को कहता है और अपने घर का दरवाज़ा बन्द करके उस थोड़े से तेल को एक-एक कर सारे बर्तनों में उंडेलने के लिये कहता है!

वो और उसके बच्चे जैसा कहा गया था बिलकुल वैसा ही करने लगे और जब आखिरी बर्तन भर गया तो तेल थम गया।

अचम्भे की बात यह है कि उसके पास इतना तेल जमा हो गया कि उसे बेचकर वह अपना कर्ज़ चुका सके और अपने परिवार का भी जीवन-निर्वाह कर सके!
कितना विश्वासयोग्य और शक्तिशाली परमेश्वर हमारे पास है।

जब हम मुसिबत में हों तो क्या हम मदद लेने की सलाह लेते हैं?
और जब कोई हमें सलाह देता है जो हमारे मन के मुताबिक न हो तो क्या हम उस सलाह को मानते हैं?
हमारे पास जो थोड़ा है क्या उसे हम परमेश्वर के हाथों में सौंपने के लिये तैयार हैं?

नोवेंम्बर 2013 को मेरे बच्चे का जन्मदिन था। मैंने उससे पूछा कि उसे जन्मदिन पर क्या उपहार चाहिये। तो उसने कुछ जवाब नहीं दिया। पर कुछ समय बाद हिचकिचाते हुए आकर कहा कि उसे चित्रकारी के लिये एक आधुनिक फोन(टॅबलेट) चाहिये। मैंने उससे उसकी कीमत के बारे में पूछा। उसने कहा 7000/- रुपये। वो मेरे लिये भारी रक़म थी। मैंने कहा कि मुझे क्षमा करे क्योंकि मेरे पास अभी उतने पैसे नहीं हैं लेकिन उसके लिये हम प्रार्थना कर सकते हैं और जब पैसों का बन्दोबस्त हो जाए तब खरीद लेंगे। फिर मैं सोचने लगा कि मैं कैसा पिता हूँ , मेरा बेटा कभी कुछ मांगता नहीं और जब उसने कुछ मांगा तो मैं उसे दे नहीं पा रहा हूँ?

मेरे पास केवल एक ही उपाय था कि मैं अपना दशमांश कम करूँ और उसका उपहार खरीदूँ। फिर मैंने सोचा कि परमेश्वर को कम देकर मेरे बेटे को ज्यादा देना मेरे लिये सही नहीं है!

मैंने पहले परमेश्वर को देने और फिर इन्तज़ार करने का निर्णय बनाया। उसी सप्ताह हमारे ऊपर जो व्यक्ति रहता है उसने अपने कमरे की खीड़की की जाली सही करने में मेरी मदद मांगी। वह एक चित्रकार था और मैंने उसे कई बार टॅबलेट (बड़ा फोन) पर काम करते देखा था, तो उससे पूछा कि कौनसा टॅबलेट अच्छा रहेगा?

उसने कहा कि उसके पास दो है जिसमें से एक ऐसे ही पड़ा है और मैं उसे ले सकता हूँ! उसी समय उसने अपना ब्रीफकेस निकाला और उसमें से टॅबलेट निकालकर मुझे दिया, मैंने पूछा कि उसके कितने पैसे दूँ! उसने कहा-कुछ नहीं!

मैं यह नहीं कह रहा कि कुछ पाने की अपेक्षा से हमें परमेश्वर को देना चाहिये। लेकिन मुद्दा यह है कि हम परमेश्वर पर

विश्वास करें कि वह हमारा पिता है जो हमसे पहले हमारी ज़रूरतों को जानता है और वह हमारी चिन्ता करता है और इसलिये चाहे हमारे पास थोड़ा ही हो वो हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा! और जब हमें यह लगे कि हमारे पास थोड़ा ही है फिर भी परमेश्वर को देने में पीछे न हटें!

उन परिस्थितियों को लिखो जब आप भयंकर मुसीबत में थे और परमेश्वर ने आपकी मदद की!
उसके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो और भविष्य में जब भी आप ऐसी परिस्थिती में फंसो तो याद करो कि सब परमेश्वर के नियंत्रण में है।
ऐसी परिस्थितियों में सलाह लो और अपनी इच्छा के मुताबिक करने के बजाए सलाह के अनुसार करो।

परमेश्वर के दिये हर छोटे आशिषों के प्रति आभारी रहो। इतनी सारी चीज़ें परमेश्वर ने हमें दी हैं जिसका हमें कद्र करना चाहिये और परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिये। उन बीस नए चीज़ों को लिखो जिनके लिये आज से पहले कभी आपने परमेश्वर का धन्यवाद नहीं किया और उनके महत्व को समझो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 23)

अपनी आँखें खोलो और परमेश्वर के हाथ को देखो

2*राज्ञा*6:8-23

हालांकि इस्राएल में मूर्तिपूजा अपनी चरमसीमा पर थी जिससे परमेश्वर व्यभिचार के समान घृणा करते हैं, फिर भी जब इस्राएल मुसीबत में था तब परमेश्वर ने अपने नबी एलीशा के द्वारा उनकी मदद की।

शक्तिशाली राज्य सीरिया ने इस्राएल पर हमला बोल दिया। परन्तु इस्राएल पर परमेश्वर का हाथ था-परमेश्वर जो मनुष्यों के मन के विचारों और मनसाओं को जानता है अपने नबी एलीशा के द्वारा इस्राएल के राजा पर अपने उपायों और योजनाओं को प्रकट किया।
तो सीरिया के खिलाफ इस्राएल के पास एक नीति तैयार रहे।
असीरिया के राजा का यह अनुमान था कि उसके खेमे में कुछ जासूस हैं जो इस्राएली राजा को उनकी खबर पहुँचा रहे हैं। लेकिन उसके अपने एक सेनापती ने उससे कहा, "एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वो इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है जो तू शयन की कोठरी में बोलता है।"
तो सीरिया के राजा ने दोतान से एलीशा को पकड़कर लाने के लिये एक भारी दल को भेजा। उन्होंने उस नगर को घेर लिया, सुबह जब एलीशा का सेवक उठकर बाहर गया तो इतने बड़े सैन्यदल को नगर को घेरे देखकर घबरा गया।
परन्तु एलीशा ने कहा, व. 16-17

क्या आप जानते हैं कि आत्मिक शक्तियाँ हैं जो हमारी रखवाली करते हैं। हमारी आँखों से हम उन्हें नहीं देख सकते! यदि हम एक भारी सेना से घिर जाएं तो भी हमारे चारों ओर हमारी सुरक्षा के लिये स्वर्गदूतों का दल हम पर आक्रमण करने आए हुए दल से बड़ा होता है!

जिस क्षण सेवक की आँखें खोली गईं और जब उसने अपने चारों तरफ अग्निमय रथों को देखा तो उसका डर भाग गया और वह आत्मविश्वास से भर गया!

हम शायद ऐसी बात का अनुभव कभी न कर पाएं लेकिन हमें यह विश्वास रखना चाहिये कि परमेश्वर और उनके स्वर्गदूत हमारी सुरक्षा के लिये हमारे चारों तरफ हैं वो हमारे लिये अच्छी लड़ाई लड़ रहे हैं। जब हमारा ऐसा विश्वास

होता है तो हम किसी भी परिस्थीती में घबराते या डरते या चिन्तित नहीं होते। इसके विपरीत हमारे चारों तरफ मचे कोलाहल के बीच भी हम निश्चिन्त रह सकते हैं। जब हम परमेश्वर ऐसा विश्वास रखते हैं तो परमेश्वर भी अपनी बढ़ाई हुई भुजा से हमारी मदद करते हैं।

आगे का भाग और भी मज़ेदार है- *वचन* 18-23 फिर से पढ़ो
एलीशा ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि उसे पकड़ने आई सेना को अन्धा कर दे और परमेश्वर ने तुरन्त ऐसा कर दिया! फिर वह उन्हें इस्राएल की राजधानी सामरी नगर में ले आया।
तो उसने उन्हें सामरी नगर के शहरपनाह में फंसा दिया और इस्राएल की सेना ने उन्हें घेर लिया। फिर उसने उनकी आँखें खोलीं! अब कौन डर रहा था?

जो इस्राएल के राजा और उसकी सेना से न हो सका वह बिना हत्यार के एक साधारण से मनुष्य ने परमेश्वर की शक्ति से कर दिखाया!

फिर इस्राएल का राजा जिसकी झोली में आकर वो गिरे उनको मार डालना चाहता था। लेकिन एलीशा ने उनके लिये भोजन का प्रबन्ध करने और उन्हें बिना नुकसान पहुँचाए भर पेट खाना खिलाकर उनके देश को वापस भेजने की आज्ञा दी।

देखो ये कहानी कैसे खत्म हुई *वचन* 23

ध्यान दो कि किस तरह से परमेश्वर के हाथ ने शक्तिशाली रूप में काम किया।
यह भी सोचो कि यदि परमेश्वर बीच में न पड़ते तो क्या होता?
हमारे शत्रुओं के साथ भी हम कैसे बर्ताव करें, परमेश्वर क्या चाहते हैं?
मत्ती 5:38-48, ***लूका*** 6:27-36, ***रोमियों*** 12:9-21 **पढ़ो।**

क्योंकि हमेशा जीवन का मतलब हम समझ नहीं पाते हैं तो हमें चाहिये कि अच्छे और बुरे दोनों परिस्थितियों में हम यह भरोसा करते रहेंगे कि परमेश्वर हमारी भलाई के लिये हमेशा काम करते रहते हैं। जो बात मायने रखती है वो सिर्फ यह है कि आप परमेश्वर से प्रेम करते हो कि नहीं- *रोमियों* 8:28।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 24)

परमेश्वर का हाथ उनके लिये काम करता है जो उसका आदर करते हैं

इस्राएल के लिये सबसे दुःख का समय तब था जब उन्होंने प्रभु को त्याग दिया था। उन्हें बेबीलोनियों के हाथों में दे दिया गया। नबूकदनेस्सर की सेना ने परमेश्वर के मन्दिर का विनाश किया और उसमें से कई मौल्यवान वस्तुएं ले गए और कई इस्राएलियों को बन्धुआ बनाकर बेबीलोन ले गए।

दानिय्येल 1:1-21 पढ़ो

वचन 3-4
सुलैमान के समय से दूसरे राष्ट्र इस बात को जानते थे कि परमेश्वर ने अनेक इस्राएलियों को अद्भुत बुध्दि दी है। (यह आज भी दिखाई देता है!) नबूकदनेस्सर अपने राज्य की व्यवस्था के लिये ऐसे बुद्धिमान लोगों का उपयोग करना चाहता था।

वचन 5 पढ़ो-राजा ने अपने भोजन और दाखमधु में से प्रतिदिन उनको देने की आज्ञा दी। उन्हें तीन वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाना था और फिर तीन वर्ष के पश्चात उन्हें राजा की सेवा में कार्य करना था।
प्रशिक्षण के लिये आए लोगों को भी राजा के भोजन से भोजन मिलना था। यह एक अच्छा प्रस्ताव लगा क्योंकि यह सारे लोग गुलाम बनाकर लाए गए थे-एक गुलाम और क्या अपेक्षा कर सकता है? परन्तु दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के लिये यह एक आशिष नहीं परन्तु बोझ था क्योंकि बेबीलोनी लोग अशुध्द भोजन खाते थे। यह युवक पवित्र-शास्त्र जानते थे और कैद में रहकर भी वो परमेश्वर की आज्ञाओं को थामे रहना चाहते थे। राजा के निर्देशों का पालन न करने से मौत भी मिल सकती थी।

लेकिन एक सांसारिक राजा के आज्ञाओं का पालन करने की बजाए परमेश्वर की आज्ञाओं को थामे रहने के लिये अपने जीवन का जोखिम उठाने के लिये भी तैयार थे।

वचन 8-16 पढ़ो
वचन 8-9 जब कोई परमेश्वर को महिमा देना चाहता है तो उस बात को पूरा करने में उसकी मदद करने के लिये परमेश्वर उतर कर उसके पास आते हैं। यहाँ पर परमेश्वर ने दानिय्येल की मदद करने के लिये अफसर के दिल में उसके प्रति कृपा और सहानुभूति भर दी।
यह एक न होने वाली बात है कि एक बेबीलोनी अफसर के दिल में एक इब्री के लिये कृपा जागे! परन्तु परमेश्वर के लिये कुछ भी असम्भव नहीं!

वचन 12-15 में दानिय्येल ने अफसरों से क्या बात कि देखो।

क्या इस बात की कल्पना करना सम्भव है कि यह पुरूष जो केवल सागपात खा रहे थे वे शाही भोजन खा रहे दूसरे जवानों से अधिक तन्दरूस्त और हृष्ट-पुष्ट लग रहे थे? पर ऐसी ही बातें परमेश्वर हासिल करते हैं! इसीलिये मुखिया ने उनका शाही भोजन छुड़ाया और उन्हें केवल सागपात देने लगा ताकि वो भी बिना किसी चिन्ता के दूसरी बातों पर अपना ध्यान लगाए रहें।

कहानी यहाँ खत्म नहीं हुई *वचन* 17-19 पढ़ो

ये पुरूष जो संसार के किसी भी दूसरे लाभों से बढ़कर परमेश्वर का आदर करने के लिये तत्पर खड़े रहे, परमेश्वर उनसे इतने प्रसन्न हुए कि उन्हें हर प्रकार के साहित्य और शिक्षण के ज्ञान से भरपूरी से भर दिया। दानिय्येल को परमेश्वर ने हर प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ को जानने के ज्ञान की योग्यता दी।

प्रशिक्षण के बाद उन्हें राजा के सामने लाया गया और उसने उनकी परीक्षा ली। *वचन* 20

देखो कि इन जवान पुरूषों के जीवन में परमेश्वर के हाथों ने कैसे इतने शक्तिशाली रूप में काम किया? हालांकि उनके लिये ये काफी कठीन समय था-उन्होंने अपने घरों को जलकर राख होते, अपने परिवारवालों को मारे जाते, और जिस परमेश्वर से वो प्रेम और उसकी सेवा करते उसके मन्दिर को जलते हुए देखा-फिर भी उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का निर्णय बनाया बिना इस बात की परवाह किये हुए कि इसके कारण उनको हर प्रकार की सज़ा मिल सकती थी।

क्या आपका संकल्प ऐसा है? या फिर ऐसी परिस्थितियों में आप समझौता कर लेते हैं?
क्या आप अधार्मिक बातों और अधार्मिक पार्टी मनाने में दूसरे सांसारिक लोगों के साथ जुड़ जाते हैं? आप भीड़ के

साथ मिलकर अधार्मिक काम क्यों करते हैं?
आप किससे डरते हो परमेश्वर या अपने आस-पास के लोगों से?
आप मौका, काम, ओहदा और दोस्तों को खोने के डर से समझौता कर लेते हो?
क्या आप ये विश्वास करते हो कि जिस तरह से परमेश्वर ने दानिय्येल के जीवन में काम किया आपके जीवन में भी काम कर सकते हैं?
आप दानिय्येल की तरह बनने और उसकी तरह संकल्पित होने का प्रयत्न क्यों नहीं करते?
अपने जीवन में पहले आपने जिन क्षेत्रों में समझौते किये उनको लिखो और उनका कारण क्या था यह भी लिखो। और भविष्य में कौनसी परिक्षाओं में आप पड़ सकते हो यह भी लिखो और अब आप उनका सामना अलग रीति से कैसे करोगे यह लिखो क्योंकि आप परमेश्वर पर दानिय्येल और उसके मित्रों के समान विश्वास करते हो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 25)

परमेश्वर का हाथ शक्तिशाली को अपने घुटनों पर लाता है

नबूकदनेस्सर ने एक सपना देखा और वह चाहता था कि उसके सभी ज्योतिषी, तन्त्री, दोन्हे और कसदी उसने जो सपना देखा था उसका अर्थ बताएं। परन्तु उन सभी ने अपनी असमर्थता जताई और कहा, "*जो बात राजा पूछता है, वह अनोखी है, और देवताओं को छोड़कर, जिनका निवास मनुष्यों के संग नहीं है, और कोई दूसरा नहीं जो राजा को यह बता सके।*"

दानिय्येल 2:12 पढ़ो- इस बात से राजा इतना क्रोधित हुआ कि उसने बेबीलोन के सभी पण्डितों को मार डालने की आज्ञा दी।

जिन पण्डितों को मारा जाना था उस सूचि में दानिय्येल और उसके मित्रों के नाम भी थे। तो दानिय्येल ने राजा से उसके सपने का अर्थ बताने के लिये समय मांगा। फिर दानिय्येल अपने घर लौटा और अपने मित्रों से परमेश्वर से बिनती करने को कहा कि परमेश्वर उस पर दया करें और राजा के सपने के भेद को खोलें और उसका अर्थ बताएं। उसी रात परमेश्वर ने सपने का भेद और उसका अर्थ दानिय्येल पर खोला। इसके कारण दानिय्येल परमेश्वर के गुण-गान से भर गया।

फिर वह राजा के पास गया और उसे उसके सपने का अर्थ बताया। पर इस बात का श्रय उसने नहीं लिया बल्कि सारी महिमा परमेश्वर को दीया और राजा को यह बताया कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो सारे भेदों को खोलता है और उसीने इसे भी खोला है।

पहले *वचन* 31-35 तक वह सपने के बारे में बताता है और फिर *वचन* 36 से उसका अर्थ: सपने में देखे मूर्ती का अर्थ शक्शिाली राज्यों के रूप में किया गया जिन्होंने संसार के अधिकतर भाग पर राज्य किया:सोने का सिर=बेबीलोन; चांदी की छाती=मादी/फारस; पीतल का पेट और जांघें=यूनान; लोहे के पांव=रोम।

सपने का सबसे महत्वपूर्ण भाग जिसमें संसार के भविष्य के बारे में अचम्भित करने वाली भविष्यवाणी की गई वह यह थी: *उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा।* व.44

यीशु के आने और जिस राज्य की स्थापना वह करेगा जो सारे संसार में फैलेगा उसके बारे में यह एक सबसे अद्‌भुत भविष्यवाणी है, जो दानिय्येल के मरने के 500 वर्षों बाद पूरा हुआ (दानिय्येल करीब 536 ई.पू. तक ज़रूर जीवित रहा होगा)।

राजा ने दानिय्येल के सपने के अर्थ बताने की प्रतिक्रिया में दानिय्येल का बड़ा सम्मान किया और उससे भी बढ़कर उसने स्वर्ग के परमेश्वर जिसकी दानिय्येल आराधना करता था और जिसने सपने के इस भेद को दानिय्येल पर खोला था उसका भय माना। ***वचन***46-49 पढ़ो।

दानिय्येल का परमेश्वर से इस स्वप्न का अर्थ जानने के लिये मदद मांगने का सबसे अद्‌भुत असर यह हुआ कि शक्तिशाली राजा नबूकदनेस्सर को परमेश्वर को समझने का मौका परमेश्वर ने दिया। ***वचन***47 में राजा यह मानता है कि... ***वचन***47 पढ़ो।

परमेश्वर सबसे ज्यादा क्या चाहते हैं? ***१तिमुथियुस***2:3-4, ***यूहन्ना***4:23

परमेश्वर चाहते हैं कि बड़े-छोटे सभी मनुष्यों का उध्दार हो और वे सच्चाई जान सकें। और साथ ही परमेश्वर ऐसे सच्चे आराधकों को ढूंढते हैं जो पिता की आराधना सच्चाई और आत्मा से करें।

लेकिन इसे वो कैसे हासिल करते हैं? उसका पराक्रमी हाथ दानिय्येल जैसे लोगों के द्वारा और आज आपके और हमारे द्वारा काम करता है!

आज हमने देखा कि परमेश्वर के हाथ ने दानिय्येल के द्वारा कैसे शक्तिशाली रूप में काम किया कि एक पराक्रमी राजा को परमेश्वर की अच्छाई को मानने पर मजबूर किया और सच्चे परमेश्वर की आराधना करने के लिये उसे उसके घुटनों पर लाया। (जैसे हम आगे पढ़ेंगे तो देखेंगे कि नबूकदनेस्सर पूरे मन से परमेश्वर के पीछे नहीं चला और इसीलिये उसने उद्धार नहीं पाया-पर याद रहे कि अपना काम सही रूप से करने में परमेश्वर और दानिय्येल असफल नहीं हुए)

ऐसे काम करने के लिये इस समय परमेश्वर आपका भी उपयोग करना चाहते हैं। क्या आप अपने परीवार, मित्रों, अधिकारियों और पड़ोसियों पर परमेश्वर की महानता प्रकट करने के लिये दानिय्येल की तरह ताकत पाने के लिये परमेश्वर की कृपा खोज रहे हैं? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि यह हो सकता है?

शमुएल की कहानी:
शमुएल कई वर्षों पहले काम की तलाश में बिदर से बंगलूरू आया। उसका परीवार आर्थिक चुनौतियों से गुज़र रहा था। वह एक चित्रकार (आर्टिस्ट) है। शुरूआत में उसे कोई काम नहीं मिला। वह एक सरकारी बाग में सोया करता था और उसी बाग में पेड़-पौधों को डाले जाने वाले नल के पानी से नहाया करता था। परन्तु वह एक मेथॉडिस्ट मसीही परीवार से था और आतुरता से परमेश्वर की खोज में था।
एक रविवार को उसने निश्चय किया कि परमेश्वर की आराधना करने के लिये वह किसी न किसी कलीसिया में ज़रूर खोज निकालेगा। तो वो जहाँ रहता था वहाँ से प्रार्थना करते हुए निकला कि उसे परमेश्वर की आराधना करने के लिये एक बढ़िया कलीसिया मिल जाए। कुछ 7 कि.मी. चलने के बाद उसने एक बॅनर देखा जिसपर लिखा था, 'इंडियन चर्च ऑफ क्राईस्ट, सभी का स्वागत है'। तो बंगलूरू में जहाँ पर हम आराधना के लिये मिलते थे उस सभाग्रह में वो आया। कलीसिया के तुरन्त बाद भाईयों ने उसके साथ पवित्र-शास्त्र का अध्ययन किया और उसने भी वचनों को समझा और बप्तिस्मा लिया।

जबसे उसका बप्तिस्मा हुआ तब से वह 700 कि.मि. दूर गांव में अपने परीवार के लोगों को मिलने का प्रयत्न करता रहा।
जल्द ही परमेश्वर ने उसे आशिष दिया और उसने विज्ञापन के बोर्ड बनाने का अपना खुद का कारोबार शुरू किया। उसका कारोबार अच्छा चलने लगा और एक-एक कर वो अपने परीवार के लोगों को बंगलूरू में लाकर उनको काम पर लगाने लगा और साथ ही अपने अनेक रिश्तेदारों को परमेश्वर के सुसमाचार के बारे में बताने लगा और उसमें उसके दो भाई भी थे जो शिष्य बने।
फिर वह अगुवों से बिदर को एक मिशन टीम भेजने की विनती करने लगा। बंगलूरू की कलीसिया में कोई भी बिदर को मिशन टीम भेजने की बात नहीं सोच रहा था।

शुरूआत में उसकी बात को किसी ने भी गम्भीरता से नहीं लिया क्योंकि उसका गांव बंगलूरू से बहुत दूर था और राज्य में दूसरी जगहों पर कलीसिया स्थापित करने की योजनाएं बन रही थीं। जैसे शमुएल लगातार इस बात के लिये प्रार्थना करता रहता और बात करता रहता था तो हम कुछ अगुवों ने उसके साथ उसके गांव जाने का निर्णय बनाया। और 2006 में हम उसके गांव गए वहाँ पर मेथोडिस्ट कलीसिया में मीटिंग आयोजित किया और हमने उनकी कलीसिया में प्रचार किया और उन्हें शिष्यता के बारे में सिखाया। प्रतिक्रिया बढ़िया थी। उन्होंने खुले मैदान में एक मीटिंग का आयोजन किया जहाँ पर कई सौ लोग आए और वहाँ की प्रतिक्रिया भी उत्तम थी। हम कई जगहों पर गए और क्योंकि बिना बताए ही हम इन जगहों पर जा रहे थे तो जैसे ही किसी को पता चलता कि हम प्रचार करने आए हैं तो आधे घंटे के अन्दर 50-60 लोग अपने हाथों में बाईबल लिये सुसमाचार सुनने की अद्‌भुत उत्सुकता के साथ एक जगह पर जमा हो जाते।

लोगों का यह चकित करने वाला जोश देखकर हम ***मत्ती*** 9:36 में कहे यीशु के वचनों को याद करने को मजबूर हो गए, ***जब यीशु ने भीड़ को देखा तब यीशु को लोगों पर तरस आया; क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वे व्याकुल और भटके हुए थे।*** ***वचन*** 37-38 पढ़ो।

फिर हमने प्रार्थना करना शुरू किया और वापस आकर वहाँ जो कुछ भी हुआ वह सब बंगलूरू कलीसिया को बताया। बिदर को मिशन टीम भेजने की योजना से सभी शिष्य बहुत खुश थे। उस वर्ष के अन्त में मिशन टीम की मदद के लिये हमने क्रिसमस कार्निवल का आयोजन किया और उसके द्वारा हमने रूपये 3,50,000/- जमा किया।

उस समय हम बिदर जाने के लिये लोगों को तैयार करने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। बंगलूरू से ४ और हैद्राबाद से 4 लोग जाने के लिये तैयार हुए।
2007 में मिशन टीम भेजा गया। फिल्लीप और प्रमिला जो उस समय कुंवारे थे ने मिशन टीम की अगुवाई की। डेविड और मोनिका उनके साथ गए और उन्हें कुछ सप्ताहों तक प्रशिक्षण दिया। 30 दिन के अन्दर परमेश्वर की मदद से इस टीम ने 8 लोगों को बप्तिस्मा दिया और एक महीने के समय में यह संख्या दुगनी हो गई। पहले महीने में जिन्होंने बप्तिस्मा लिया था उनमें से एक शमुएल का भाई सन्तोष था। जल्द ही उसकी माँ ने भी बप्तिस्मा लिया।

और कुछ ही महिनों में अनादूर नामक शमुएल के गांव में एक पारिवारिक गुट की शुरूआत हुई।
पहले वर्ष (अप्रैल 2007 से दिसम्बर 2007) तक उन्होंने 20 लोगों को बप्तिस्मा दिया। और 2007 के अन्त तक कलीसिया में 25 सदस्य हो गए। 2008 में हालांकि कुछ मिशन टीम के लोग वापस अपने-अपने कलीसिया को लौट गए परमेश्वर ने 20 लोगों के द्वारा कलीसिया को आशिष दिया। 2009 में 13 आत्माएं बचाई गईं और कलीसिया में 50 सदस्य हो गए। और आज 2014 में 123 लोग कलीसिया के सदस्य हैं जिनमें 15 कॉलेज जाने वाले बच्चे हैं।

उन लोगों के नाम की सूचि बनाओ जिन तक पहूँचना और विश्वास बांटना आपको मुश्किल लगता है, और उन तक

पहुँचकर उनके साथ सुसमाचार बांटने के लिये आपको मौका, साहस और ज्ञान मिले और सुसमाचार को ग्रहण करने के लिये उनके दिलों को खोलने के लिये परमेश्वर से विश्वास के साथ प्रार्थना करो।

महान प्रचारक विल्यम कॅरी जिन्होंने आकर बंगाल में सुसमाचार फैलाया ने कहा, "परमेश्वर से महान कार्यों की अपेक्षा करो। परमेश्वर के लिये महान कार्य करो।"
आओ हम ऐसा ही करें और शक्तिशाली रूप से परमेश्वर के हाथ को हमारे जीवन में काम करने का अनुभव लें। विश्वास से बड़े काम करो। दानिय्येल का परमेश्वर आपको विजय दे!

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 26)

परमेश्वर का हाथ जो आपको आग से बचाता है

हमारे विश्वास को गहरा करने और संकल्प पाने के लिये पवित्र-शास्त्र में दानिय्येल की किताब एक महान किताब है। आशा है कि दानिय्येल अध्याय 2 पढ़ने के बाद परमेश्वर को महिमा देने के लिये आप भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।

दानिय्येल 3 पढ़ो
नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक विशाल मूर्ति बनवाई। और सारे बेबीलोन में यह आज्ञा सुनाई गई कि जैसे ही संगीत बजे तो सभी को इस मूर्ति के आगे दण्डवत करना है। जो भी गिरकर दण्डवत नहीं करेगा उसे उसी समय धधकती भट्ठी में डाल दिया जाएगा। फिर उन्होंने देखा कि, शद्रक, मेशक और अबेदनगो जो यहूदी थे और दानिय्येल के साथी थे, राजा की आज्ञा का पालन उन्होंने नहीं किया।
क्राधित राजा ने उन्हें बुलाया और उनसे पूछा। उस मूर्ति को दण्डवत करके उसने उनको अपना जीवन बचाने का एक और मौका दिया।
उसने उनसे यह भी कहा कि यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो उन्हें उसी समय धधकती भट्ठी में डाल दिया जाएगा। उसने उनसे पूछा, "फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुमको मेरे हाथों से छुड़ा सके?" *वचन* 16-18 पढ़ो।

इन पुरूषों को दस आज्ञाओं का ज्ञान था जिसमें सबसे पहली आज्ञा थी कि हमें किसी मूर्ति की पूजा नहीं करनी चाहिये और इस परदेस में जहाँ उन्हें बन्धुवा बनाकर लाया गया था यहाँ पर भी वो परमेश्वर की आज्ञा को मानने से इनकार नहीं कर रहे थे। राजा नबूकदनेस्सर कितना शक्तिशाली है इस बात के गवाह वे खुद थे क्योंकि उनके देश यहूदा पर चढ़ाई करके उसने उसे जीत लिया था। और अब यहाँ बेबीलोन में वो ऊंचे ओहदे के अफसरों के रूप में राजा की सेवकाई कर रहे थे और व्यक्तिगत रूप से राजा उन्हें जानता था और उनकी बुध्दिमत्ता और ज्ञान से राजा खुद प्रभावित था। अब यदि वो मनुष्य की आज्ञा का पालन न कर परमेश्वर की आज्ञापालन का चुनाव करें तो अपना जीवन और जो कुछ उनके पास था वो सब उनको खोना पड़ता!

यदि आप उनकी जगह पर होते तो किस प्रकार का चुनाव करते?
किन परिस्थितियों में आप समझौता करने की लालसा में पड़े?
परमेश्वर की बजाए लोगों से डरकर परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने से आप कैसे इनकार किया था?
लोगों से लाभ पाने की चाहत में क्या आपने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना?
आपको क्या खोने का डर है? क्या वह आपका काम, बढ़ौतरी, परीवार या आपके बॉस का साथ, अपने माता-पिता की सम्पत्ति का हिस्सा, दोस्ती है?
अपने दोस्तों से यीशु के बारे में बात करने से क्या आप डरते हो?
हममें से कईयों को धधकती भट्ठी में झोंके जाने का भय नहीं है! फिर भी हम कितनी आसानी से समझौता कर लेते

हैं!
उनके संकल्पों को देखो:
1. उन्हें यह पूरा विश्वास था कि परमेश्वर उन्हें आग से बचाएंगे।
2. यदि उन्हें परमेश्वर नहीं भी बचाते तो भी, वे परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ने के लिये तैयार नहीं थे।
   किस बात ने उन्हें इतना संकल्प दिया?
1. उन्हें परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा था।
2. उन्होंने अपने जीवन से बढ़कर परमेश्वर से प्रेम किया।
3. गहरे संकल्प के साथ वे अन्यजाति के लोगों से परमेश्वर पर अपने विश्वास को बांटना चाहते थे क्योंकि वे जानते थे कि सिर्फ जीवित परमेश्वर में सच्चा विश्वास ही इन अन्यजाति के लोगों को उद्धार दिला सकता है।

आपके अनुसार परमेश्वर कितने शक्तिशाली हैं?
यदि मुसिबतों से बचाने के लिये वो अपने हाथों को नहीं बढ़ाएंगे तो क्या तब भी आपका उनकी आज्ञाओं को मानोगे और उनपर भरोसा रखोगे?

वचन 19-30 पढ़ो और गहरे संकल्प के साथ डंटे रहने के परिणाम को देखो। हालांकि जब इन लोगों को उस भट्ठी में फेंका गया तब उसे 7 गुना ज्यादा गर्म किया गया था फिर भी इन्हें कोई हानी नहीं पहुंची-जिन सिपाहियों ने हमारे भाईयों को उस भट्ठी में फेंका आग के लपटों के कारण वो मारे गए। परन्तु परमेश्वर के ये तीन जन उस धधकती आग में पूरी तरह सुरक्षित थे। राजा यह देखकर चकित रह गया कि उस भट्ठी में चार लोग बन्धनमुक्त और बिना किसी हानि के आराम से टहल रहे थे। और चौथा पुरूष राजा को परमेश्वर के पुत्र के सदृश दिख रहा था। हो सकता है कि वह कोई स्वर्गदूत या फिर यीशु खुद उन परमेश्वर के साहसी लोगों से संगती करने और उन्हें प्रोत्साहन देने के लिये उस आग में आया हो!

जब उन्हें आग से बाहर निकालकर उनके शरीर को जांचा गया तो यह पाया कि उनके शरीर को आग से कुछ भी हानि नहीं पहुंची थी, उनके सिर का एक बाल भी झुलसा नहीं था; उनके कपड़े जले नहीं थे, और उनपर से आग की बु भी नहीं आ रही थी।

इस बात ने राजा को अपने विचार बदलने, अपनी गलती को मानने और यह जानने पर मजबूर कर दिया कि जिस देवता की ये लोग आराधना करते हैं वह सच में एक शक्तिशाली परमेश्वर है और उसने स्वर्ग के परमेश्वर की स्तुति की। वचन 28-30 पढ़ो।

देखो कैसे उसका स्वभाव गुस्से से चकित होने में बदल गया! इन लोगों ने अपने परमेश्वर को छोड़ किसी और देवता की आराधना या सेवा करने से मर जाना बेहतर समझा इस बात के लिये अब वह उनकी प्रशंसा कर रहा था। राजा उनसे इस कदर प्रभावित हुआ कि उनको और ऊंचा पद दिया और साथ ही सारे राष्ट्र में ये ऐलान भी करवाया कि जो कोई भी शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर खिलाफ कुछ भी कहेगा तो उसे कड़ी सज़ा दी जाएगी।

परमेश्वर को अपना प्रेम और विश्वास दिखाने के लिये क्या आप जोखिम उठाने के लिये तैयार हो?
यदि आपका काम आपको एक वचनबध्द शिष्य बने रहने में बाधा डाल रहा है तो क्या आप परमेश्वर पर भरोसा रखकर उस काम को छोड़ने के लिये तैयार हो?
कुबांरों-क्या आप एक शिष्य से विवाह करने के लिये तैयार हो? यदि जल्दी आपकी पसन्द का कोई नहीं मिला तो आप क्या करोगे? क्या आप समझौता करके जो शिष्य नहीं है उससे विवाह कर लोगे? या फिर आप अपने परिवार के दबाव या खुद के पापमय प्रवृत्ती के दबाव का विरोध कर यह कहोगे-मेरा परमेश्वर मुझे विवाह के लिये एक शिष्य देने

में सामर्थी है और यदि नहीं भी देता है तो भी मैं जीवनभर एक जोशिला /जोशिली मसीही बनकर जीऊंगा/जीऊंगी?

आओ हम पूरे मन से अपने परमेश्वर से प्रेम करें और उसकी सेवा करें, और उसके लिये सबकुछ त्यागने के लिये तैयार रहें, यह जानकर कि वो हमारे लिये अपने पुत्र का अमूल्य जीवन त्याग करने के लिये तैयार था।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 27)

परमेश्वर का हाथ जो निर्दोषों का न्याय करता है

दानिय्येल 6 पढ़ो

जब दानिय्येल और उसके मित्र बेबीलोन में रह रहे थे तभी, मादी और फारस ने बेबीलोन को हराकर सारे राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। मादी का नया राजा दारा भी दानिय्येल और उसके मित्रों से इतना प्रभावित था कि उसने उनको अध्यक्ष के रूप में नियुक्त कर दिया। परन्तु दानिय्येल सभी अधिपतियों से उत्तम था ***वचन*** 3 देखो।

जब आपके किसी सहकर्मी को आपसे बड़ा ओहदा दिया जाता है तो आपको कैसा लगता है? यदि आप धार्मिक नहीं हैं तो आप जलन और ईष्या से भर जाएंगे!
दूसरे अधिपती जो दानिय्येल के साथ राजा की सेवकाई करते थे ईष्या से भर गए। वे दानिय्येल को उस पद से हटाना चाहते थे। परन्तु याद रहे कि ऐसे पद पर काम करने वाले को तभी हटाया जा सकता है जब उस पर भ्रष्ट होने का अपराध साबित हो। वे दानिय्येल की हर हरकत पर नज़र रखे थे कि उसमें कोई दोष मिल जाए और फिर राजा को उसका दोष बताकर उसको निकालवा दें।

व. 4-परन्तु वह विश्वासयोग्य था और उसके काम में कोई भूल या दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध या दोष न पा सके।

आपके आस-पास के लोग क्या आपके बारे में ऐसा कह पाएंगे? परमेश्वर के अनुयायी होने के नाते यह हमारी इमानदारी की सही परीक्षा है।

याद करो कि अपने आस-पास के लोगों से यीशु ने क्या पूछा, ***यूहन्ना*** 6:46 "***तुममें वह कौन व्यक्ति है जो मुझे पापी सिध्द कर सकता है?***" कोई भी उस पर कोई दोष नहीं लगा सका हालांकि हर समय वे उस पर दोष लगाकर उसे फंसाने की ताक में लगे करते रहते!

यह जानकर कि दानिय्येल पर वो कोई दोष नहीं लगा सकते उन्होंने अपनी नीति बदल दि-वे जानते थे कि परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति से वो कभी भी समझौता नहीं करेगा। तब उन्होंने राजा पर दबाव डालकर यह आज्ञा और नियम पारित करवाई कि अगले 30 दिनों तक जो कोई भी राजा को छोड़कर किसी और देवता या मनुष्य की आराधना करेगा उसे सिंह के मांद में डाल दिया जाएगा। (व. 7)
राजा मान गया और उसने ये आज्ञा जारी करवाई। जल्द ही उन्होंने दानिय्येल को अपने नियम के अनुसार दिन में तीन बार प्रार्थना करते हुए पकड़ा। उसे अपने प्राण खोने की चिन्ता नहीं थी, यह जानते हुए भी कि उसकी जान को खतरा है वह परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति से समझौता नहीं करना चाहता था। क्या ऐसे व्यक्ति के लिये परमेश्वर हस्तक्षेप कर उसकी मदद करेंगे! हाँ परमेश्वर ऐसे लोगों से हमेशा प्रसन्न होते हैं और अपने शक्तिशाली हाथों से

उनकी मदद करने को नीचे उतर आते हैं।

दानिय्येल को सिंह की मांद में फेंका गया। राजा को इस बात का इतना बुरा लगा कि उस रात उसने न कुछ खाया, न पीया और न ही सो पाया। तड़के सुबह राजा सिंह की मांद की ओर भागा और पाया कि दानिय्येल सुरक्षित है! सिंह की मांद से दानिय्येल ने राजा को क्या कहा सुनो...*वचन*22

देखो परमेश्वर का हाथ कैसे काम करता है-परमेश्वर अपने शक्तिशाली हाथों को बढ़ाकर उसकी नज़र में जो निर्दोष पाए जाते हैं उनकी रक्षा करता है फिर चाहे उसके विरुध्द कितनी ही शक्तिशाली ताकतें क्यों न हों।

क्या आपने कभी परमेश्वर पर शंका कर समझौता किया?
अपना आगे का जीवन आप कैसे बिताना चाहते हैं?
दानिय्येल जिन बड़ी मुसिबतों में पड़ा उतनी बड़ी नहीं परन्तु भविष्य में उन जैसी किन परिस्थितियों में आप पड़ सकते हैं लिखो।
लिखो कि आप कैसे परमेश्वर पर भरोसा रखकर और उसी की तरह कदम उठाकर उन परिस्थितियों से कैसे निपटोगे।
दूसरे भी जो लोग हैं जो इस प्रकार के परिस्थितियों में पड़ सकते हैं उन्हें दानिय्येल और यीशु के बारे में सीखाओ और प्रशिक्षण दो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी - 28)

परमेश्वर का हाथ जो अनुशासित करता और सुधारता है

यिर्मयाह 25 *पढ़ो*

अनेक चेतावनियों के बाद भी यहूदा ने परमेश्वर के विरूध्द पाप किया। जिस परमेश्वर ने उन्हें मिस्र की गुलामी से छुड़ाकर वाचा की भूमि में लाया जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती थी ऐसे परमेश्वर को उन्होंने त्याग दिया। प्रभु को त्यागने के बात वे अन्य देवताओं की आराधना में लग गए। परमेश्वर ने उन्हें दुष्टता से वापस मोड़ने और फिर से अपनी ओर लौटा लाने के लिये यशायाह और यिर्मयाह जैसे बड़े और अन्य छोटे भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। भविष्यद्वक्ता कई वर्षों तक उन्हें पश्चाताप करने की बिनती करते रहे फिर भी उन्होंने उनकी चेतावनियों पर ध्यान न दिया।
जैसे ही लोगों ने प्रभु की ओर लौटने से इनकार किया तो परमेश्वर ने उन पर न्याय की घोषणा कर दी। परमेश्वर ने यह भविष्यवाणी की कि वे फिर से बेबीलोनियों के गुलाम बन जाएंगे। यशायाह और यिर्मयाह की भविष्यवाणी सही हुई और ई.पू. 586 में बेबीलोनियों ने मन्दिर और यरूशलेम को तबाह कर दिया, कई लोगों को मार डाला और कईयों को गुलाम बनाकर बेबीलोन ले गए।

परमेश्वर धीरजवन्त और दयालू हैं पर वो न्यायप्रिय भी हैं। परमेश्वर को उनका सही न्याय करना पड़ा। लेकिन यह सज़ा उनको अनुशासित करने और उनका मन परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिये था। तो उन्होंने 70 वर्षों की गुलामी के बाद यहूदा को फिर से बसाने की भविष्यवाणी भी किया। *यिर्मयाह* 25:11।
याद रहे कि यिर्मयाह लगभग 40 वर्षों तक भविष्यवाणी करता रहा (करीब ई.पू. 626 से ई.पू. 586)।
परमेश्वर ने भी सुधार के कामों की योजना बनाई और लोगों को पहले ही से बता भी दिया। करीब ई.पू.700 में यशायाह ने ऐसी घटनाओं के घटने की भविष्यवाणी की (यशायाह ने भविष्यवाणी करना ई.पू.740 से आरम्भ किया और करीब 64 वर्षों तक भविष्यवाणी करता रहा) और ये भविष्यवाणियाँ ई.पू.536 में पूरी हुई।

यशायाह 44:28 कुस्रु के विषय में कहता है....
यशायाह 45:13
भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने भी 70 वर्षों बाद गुलामी लौटने के बारे में भविष्यवाणी की थी।

यिर्मयाह 29:10-14

एज्रा 1 पढ़कर देखो कि कैसे कुस्रु राजा ने 70 वर्षों की गुलामी के बाद कैसे उन्हें यरूशलेम में परमेश्वर का मन्दिर फिर से बनाने के लिये भेजा। (70 वर्ष तब से गिने जाते हैं जब से सबसे पहले लोगों को गुलामों को बेबीलोन ले जाया गया-इन गुलामों में दानिय्येल और उसके मित्र भी शामिल थे। यह ई.पू.605 में हुआ और गुलाम ई.पू. 536 में एज्रा के साथ वापस यरूशलेम आए)।

देखो परमेश्वर का हाथ अपने लोगों को जब वो पाप करते हैं कैसे उन्हें अनुशासित करता है और साथ ही अपने अविश्वसनीय प्रेम और अनुग्रह के कारण उन्हें फिर बसाता भी है। हम देखते हैं कि हमारा परमेश्वर कैसा महान और पराक्रमी है-वह सभी राष्ट्रों पर राज करता है इसीलिये वह उनका उपयोग अनुशासन करने और फिर से बसाने में करता है। और हम यह भी देखते हैं कि अपनी प्रतिज्ञाओं में परमेश्वर कितने विश्वासयोग्य हैं-कोई ताकत उन्हें अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने से रोक नहीं सकती।

क्या आपको अनुशासन पसन्द है? परमेश्वर के अनुशासन के प्रति आपका रवैया कैसा है?
परमेश्वर के अनुशासन का सामना पहले आप कैसे करते थे?
ऐसे समयों में परमेश्वर ने आपको फिर से कैसे स्थीर किया?

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 29)

परमेश्वर का हाथ जिसने 52 दिनों में दिवार खडा किया

नहेम्याह 1 *और* 2 *पढ़ो*

मन्दिर का फिर से बनाने के लिये पहले ही यरूबाबेल और यहोशू के साथ एज्रा यरूशलेम में था। अनेक वर्षों बाद ई.पू. 445 में नहेम्याह फारस के राजा अर्तक्षत्र के यहाँ पियाऊ का काम करता था।

ये ऐसे दिन थे जब राजा के शत्रु राजा को उसके भोजन या दाखमधु में ज़हर मिलाकर दिया करते थे।पियाऊ वह होता है जिसे राजा स्वयं चुनता है क्योंकि वह सच में एक भरोसेमन्द व्यक्ति होता है।

अध्याय 2 *में हमने पढ़ा...वचन* 1-4
इस अनुछेद में हम देखते हैं कि हर वक्त नहेम्याह ने प्रार्थना किया और फिर यरूशलेम जाकर वहाँ के शहरपनाह को फिर से बनाने की अपनी इच्छा को बताया। इस प्रकार की याचना उस व्यक्ति के प्रति देशद्रोह के रूप में ली जा सकती थी और उस पियाऊ को देशद्रोह का दोषी घोषित कर उसे मौत की सज़ा भी राजा दे सकते थे! जाकर शहरपनाह को फिर से बनाने की आज्ञा मांगकर नहेम्याह ने एक बहुत ही जाखिम का काम किया था। वास्तव में वो डर रहा था फिर भी उसने प्रार्थना कर राजा के मन को दया से भरने के लिये परमेश्वर को काम करने की बीनती की।

नहेम्याह यहीं पर नहीं रूका-उसने राजा से महानद के अधिपतियों को देने के लिये राजा से एक राजकीय पत्र मांगा

ताकि वह उन देशों से होकर बिना रोक-टोक यहूदा पहुंच सके। फिर उसने जंगल के रखवाले आसाप को देने के लिये भी एक पत्र मांगा ताकि वह उसे भवन से लगे राजगड़ की कड़ियों के लिये, शहरपनाह के लिये और वह जिस घर में जाकर रहने वाला था उसके लिये लकड़ी दे। वचन 8 का अन्तिम भाग पढ़ो।

कहानी यहीं खत्म नहीं हुई-राजा अपने दीन पियाऊ की खुशहाली के प्रति इतना चिन्तित था कि उसकी सुरक्षा के लिये उसके साथ अधिपतियों और सवार सैनिकों को भी भेजा।

क्या आप इस बात की कल्पना भी कर सकते हैं कि अपने सेवक के लिये फारस के एक राजा ने इतना सबकुछ किया? यदि परमेश्वर का हाथ हम पर है तो कुछ भी असम्भव नहीं है! पर यह सोचो कि परमेश्वर का हाथ नहेम्याह पर क्यों था? मुझे लगता है कि यह इसलिये हुआ क्योंकि उसे उस बात की चिन्ता थी जिस बात में-परमेश्वर की महिमा और आदर की चिन्ता जुड़ी थी। जब कभी भी हम अपना मन परमेश्वर की महिमा करने में लगाएंगे तो उसे पूरा करने के लिये वे अपने बलशाली हाथों से सबकुछ करेंगे।
पवित्र-शास्त्र ऐसे अनेक अद्‌भुत कहानियों से भरा पड़ा है।

अध्याय 3 से हम यह पढ़ते हैं कि इतने विरोध और धमकियों के बावजूद भी कैसे नहेम्याह और उसके आदमियों ने योजनाबध्द रीति से काम को पूरा किया। काम बहुत ही विशाल था उसके पास इमारत बनाने के काम में निपुण लोग नहीं थे, परन्तु उसने अलग-अलग काम में निपुण और अलग-अलग परिवारों को शहरपनाह को फिर से बनाने के लिये उसके अलग-अलग भागों में उन्हें नियुक्त किया।

नहेम्याह 6:15-16 में हम निष्कर्श देखें।

मानवी रूप में इतने कम समय-52 दिनों में इतने विशाल शहरपनाह को बनाना असंभव था। उसके शत्रुओं ने भी जान लिया कि यह काम इस्राएल के परमेश्वर का है। देखो यह कैसे काम करता है-जो काम इतना महत्वपूर्ण नहीं लगता-उसके द्वारा भी परमेश्वर की महिमा होती है! आस-पास के लोगों ने जान लिया कि स्वर्ग का परमेश्वर फिर से इस्राएलियों को मदद कर रहा है। तो वे भय से भर गए! कई शताब्दियों पहले जब इस्राएली मिस्र से वापस आकर वाचा की भूमि-कनान पर अधिकार किया तब भी यही हुआ। सभी लोगों ने जब यह सुना कि कैसे परमेश्वर के हाथों ने लाल समुद्र को दुभागा, कैसे यरीहो की शहरपनाह को ढाया, तो वे समझ गए कि कोई भी दानव ऐसे परमेश्वर के सामने टिक नहीं सकता जो इस राष्ट्र के साथ हाथ में हाथ डालकर काम करता है! यही भय यरूशलेम की शहरपनाह को बनाने के बाद लोगों के दिल में बस गया।

किसी जगह पर परमेश्वर के नाम का अनादर और तुच्छ जानने की बात आप सुनते हो तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होती है? क्या आप दु:खी और क्रोधित होते हैं? यदि नहीं तो आप परमेश्वर से प्रेम नहीं करते और न ही उनका आदर करते हैं!
क्या आप परमेश्वर की महिमा करना चाहते हैं? उसके बारे में आप क्या कर रहे हो?
क्या आप इसे पूरा करने के लिये परमेश्वर के शक्तिशाली हाथों की मदद के लिये प्रार्थना कर रहे हो? कैसे?

2011 में न्यु यॉर्क की कलीसिया ने परमेश्वर को महिमा देने के लिये एक बहुत ही अचंभित करने वाली योजना बनाई। उन्होंने 100 लोगों को 100 दिनों में बप्तिस्मा और फिर से स्थिर करने का लक्ष्य रखा। परमेश्वर ने उनके विश्वास को आशिष दिया और उन्होंने 87 लोगों को बप्तिस्मा दिया और 16 लोगों को फिर से स्थिर किया इस तरह 103 दिनों में पूरे 103 लोगों को बचाया गया!

तमिलनाडू में त्रीची की कलीसिया में कई वर्षो से पूरे समय कलीसिया का काम करने वाला कोई नहीं है। ॲन्ड्र्यु और

रेचल वहाँ गए। ॲन्ड्र्यु को जीविका चलाने के लिये अपने तनावपूर्ण कारोबार का ध्यान रखना पड़ता है। फिर भी उन्होंने कलीसिया के अगुवे होने का निर्णय गम्भीरता और प्रार्थना के साथ लिया। वहाँ कलीसिया के 50 सदस्य थे। उन्होंने प्रार्थना किया कि परमेश्वर की महिमा के लिये कलीसिया के सदस्यों की संख्या 100 से आगे बढ़ाने में परमेश्वर उनकी मदद करें। अब 120 सदस्य हैं और पूरे समय काम करने वाले के बिना भी कलीसिया बढ़ रही है! उनकी एक कॉलेज जानेवालों की मिनिस्ट्र भी है जिसमें मशहूर कॉलेज एन.आय.टी. के छात्र भी हैं!

क्या आप परमेश्वर के शक्तिशाली हाथों को आपके जीवन और आपकी मिनिस्ट्री में काम करके देखना चाहते हैं? परमेश्वर को महिमा देने के लिये विशेष लक्ष्य बनाओ, उनको लिखो और परमेश्वर के शक्तिशाली हाथों को उसे पूरा करने में मदद के लिये प्रार्थना करो।
नहेम्याह की तरह-दूसरों के साथ परमेश्वर के हाथों ने आपके लिये क्या किया है बांटो ताकि उनका भी विश्वास मजबूत हो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 30)
परमेश्वर का हाथ – यीशु हमारा उद्धारकर्ता

व्यवस्थाविवरण* 5:15** ***इस बात को स्मरण रखना कि मिस्त्र देश में तू आप दास था, और वहां से तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे बलवन्त हाथों और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया।

चकित कर देने वाले दया के कारण परमेश्वर इस्राएलियों को अपनी बढ़ाई भुजा के द्वारा मिस्र की गुलामी से निकाल ले आया। यह हज़ारों वर्ष पहले हुआ। हमारे परमेश्वर का मन आज भी वैसा ही है। जब वह अपने लोगों को तकलीफ में देखता है तो उसका हृदय पिघल जाता है। जैसे एक पिता अपने बच्चे को बचाने के लिये अपने हाथों को फैलाता है, हमारा स्वर्गिक परमेश्वर हमें तकलीफ में देखकर वैसे ही हमें बचाने के लिये अपने हाथों को फैलाता है। परमेश्वर का यह काम एक चिन्ह था इस बात का कि भविष्य में सारे मानव जाति के लिये वो क्या करनेवाले हैं।

मनुष्य जाति पाप की गुलाम हो गई! यह गुलामी मिस्र की गुलामी से कहीं बढ़कर दु:खदायी है। यह गुलामी हमें अनन्तकाल के दु:खों के लिये नरक में ले जाती है। वास्तव में यह हमारे ही कारण हमारे लिये था फिर भी हमारा दयालू पिता चुपचाप बैठकर हमें तकलीफ में देख नहीं सका। परमेश्वर ने सन्देशवाकों और भविष्यद्वक्ताओं को मनुष्य जाति को पापों की गुलामी से बचाने के लिये उनकी क्या योजना है यह बताने के लिये भेजा। यशायाह उन भविष्यद्वक्ताओं में से एक था जिसने परमेश्वर के प्रेम का सन्देश लाया।

यशायाह 52 *और* 53 पढ़ो
भविष्यद्वक्ता यशायाह प्रभु के हाथों के बारे में बात करता है। यशायाह में यह कुछ अनुछेद हैं जो परमेश्वर के हाथ के बारे में बात करते हैं-(*यशायाह* 40:10, 51:4-5, 51:9-10, 52:10),

यशायाह 42:10

यशायाह 52 *और* 53 परमेश्वर के हाथों को मसीहा के रूप में बयान करता है, जो आनेवाला है। (*यूहन्ना* 12:37-38)

बहुत वर्षों पहले नदी पार करते समय मैं नाव से गिर गया और क्योंकि मुझे तैरना नहीं आता था मैंडूबने लगा। और

जैसे मैं नदी की गहराई में डूबता जा रहा था, मैं ने अपनी और एक हाथ को बढ़ते हुए देखा मुझे पता नहीं था कि यह हाथ किसका है, पर अचानक मैंने उस हाथ को पकड़ लिया क्योंकि मैं जानता था कि यही मेरा आखिरी सहारा है। वापस नाव में पहुंचने के बाद मुझे पता चला कि वह हाथ मेरे चचेरे भाई का था जो मुझे बचाने के लिये तुरन्त नदी में कूदा था। मैं इतना आभारी हूं कि मुझे बचाने के लिये परमेश्वर मुझ तक मेरे चचेरे भाई के हाथों के द्वारा पहुंचे।

भविष्यद्वक्ता यशायाह परमेश्वर का एक सुन्दर चित्र बना रहा है जिसमें स्वर्ग का परमेश्वर अपने हाथों को हमारी ओर बढ़ा रहा है जो हमें स्पष्ट दिखाई दे रहा है और जब हम अपने पापों में डूब रहे हैं तो हमें बचा रहा है। वह शक्तिशाली और प्रेम करने वाला हाथ है हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह। यशायाह ने यीशु के जन्म के 700 वर्ष पहले हमारे उद्धारकर्ता के बारे में यह अविश्वनीय सचाई की भविष्यवाणी की थी। जब हम यशायाह 53 पढ़ते हैं तो हम यह जान पाते हैं कि कैसे इस 'परमेश्वर के हाथ' यीशु को हम में से हरएक को बचाने के लिये कितने दु:खों से गुज़रना पड़ा। *वचन* 4-6।

क्या आप यीशु को परमेश्वर के हाथ के समान देखते हो जो फैला है अविश्वसनीय दु:खों और त्यागों को सहने के द्वारा हमें बचाने को?

क्या आप परमेश्वर के फैले हुए हाथ-यीशु मसीह के लिये आभारी हो, जो हमें बचाने के लिये उन सारे दु:खों से गुज़रा।
इन दो अध्यायों के वचनों पर मनन करो और उनके द्वारा प्रार्थना करो और परमेश्वर के प्रेम का अनुभव कर उसमें आनन्दित रहो।

परमेश्वर का हाथ (जनवरी – 31)

परमेश्वर का हाथ – जो धार्मिक्त का मुकुट पहनाता है

प्रेरित 9:1-31 *पढ़ो*

तरसूस का रहने वाला शाऊल कलीसिया को सताता था। परन्तु यीशु उसपर प्रकट हुआ और उसके मन को अपनी तरफ मोड़ लिया। एक बार जब उसे यह बात समझ में आ गई कि यीशु ही वो उद्धारकर्ता है जिसके बारे में नबियों ने कहा था, तब पौलूस जो पहले यीशु से नफरत करता था अब उसी के लिये साहस से प्रचार करने लगा। अनेक देशों में यहूदियों और अन्य जातियों का हृदय परिवर्तन करने के लिये परमेश्वर ने उसका उपयोग महान प्रचारक और प्रेरित के रूप में किया।

2 कुरून्थियों 5:14-15 में उसने लिखा कि किस कारण से वह ऐसा जीवन जीने लगा।

जैसा पिछले पाठ से हमने सीखा, मसीह के प्रेम के कारण पौलूस इतना संकल्पित और विवश था;कि उस त्यागपूर्ण प्रेम ने उसे सिर्फ अपने लिये जीना छोड़कर यीशु उसके प्रभु जिसने हम सभी के लिये अपना जीवन बलीदा कर दिया उसके लिये जीने के लिये विवश किया।

आज आपका जीवन कैसा है? क्या आप मसीह के प्रेम से विवश हैं? आप ये कैसे कह सकते हैं?
इस बात को जानने का एक तरीका यह है कि आप यह जांचें कि किसी भी रीति क्या आप अपने लिये जी रहे हो! वो

जिन्होंने मसीह के प्रेम से संकल्प पाया है उनके जीने का केवल एक ही मकसद होगा- 'परमेश्वर को प्रसन्न करना'। (2*कुरून्थियों* 5:9)।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में विश्वास में अपने बेटे तिमुथियुस को वह लिखता है।2*तिमुथियुस* 4:6-8।

ये कुछ शब्द यह बताते हैं कि पौलूस कैसे यीशु के लिये जीया और उसका ध्यान किस चीज़ पर लगा था।

पहले पाठ में हमने देखा कि हमारे उद्धारकर्ता ने हमारे लिये कैसे अपना जीवन उंडेल दिया। हम सभी जो उसके पीछे चलते हैं हमारा भी यही स्वभाव होना चाहिये कि हम भी उसकी तरह एक-दूसरे की सेवा करके अपना जीवन यीशु के लिये उंडेल दें।
यहाँ पौलूस कहता है कि उसने उसका जीवन अर्घ के समान उंडेल दिया है। पुराने नियम में जब याजक वेदी पर अर्घ उंडेलते थे तो वह उस बर्तन को जिसमें अर्घ होता लेकर उसे पूरी तरह वेदी पर तब तक उंडेलते थे जब तक की उस बर्तन में एक बूंद भी बाकी न रहे। जब वो ये वचन लिख रहा है तब पौलूस के दिमाग में यह चित्र साफ है।

हालांकि हम यीशु के शत्रु की तरह अपना जीवना बिताते थे फिर भी यीशु ने हम सभी के लिये अपने जीवन को उंडेल दिया। यीशु के प्रेम की खातिर पौलूस ने अपना जीवना दूसरों के लिये उंडेल दिया।

अधिकतर लोगों का जो मनपसन्द वचन बाइबल में है वो है *यूहन्ना* 3:16। सच में याद करने और भरोसा करने के लिये यह एक आदर्श वचन है। यह वचन हमें याद दिलाता है कि यीशु ने हमारे लिये क्या किया और हमें आशा देता है कि हम बचाए जा सकते हैं। परन्तु उस अनन्त जीवन के वरदान और उस प्रेम के प्रति हमारी प्रतिक्रिया क्या है?

प्रेरित यूहन्ना फिर से अपनी पत्री में लिखता है कि उस प्रेम के प्रति हमारी प्रतिक्रिया कैसी होनी चीहिये-1*यूहन्ना* 3:16।

क्या यह आपका मनपसन्द वचन है? क्या इसी तरह से आप अपना जीवन बिताते हो? क्या आपको याद है कैसे आपने सच्चे प्रेम के बारे में सीखा और उसका अनुभव लिया? क्या वह यीशु और उसके बलिदान से नहीं है? क्रूस का सन्देश क्या था? जैसे मसीह हमारे लिये अपना जीवन बलिदान किया कि हम उद्धार पाएं, उसी तरह हमें भी दूसरों के लिये अपने जीवन को बलिदान करना है। प्रत्येक प्रेरित का जीवन ऐसा ही था। वो मसीह के प्रेम और दूसरों से प्रेम करने के लिये कहीं भी जाने, कुछ भी करने के लिये, और जीवन में जो कुछ है सब त्याग करने के लिये तैयार थे।

आज आप कैसे जी रहे हो? क्या अर्घ की तरह आप अपना जीवन उंडेल रहे हो? इस महीने आपका प्रचार कैसा था? क्या आपने अपना उत्तम दिया? इस पूरे वर्ष और अपना आगे का जीवन आप कैसे जीना चाहते हैं?
या फिर आपके पास क्यों समय नहीं है अपना विश्वास बांटने के लिये, किसी को मार्गदर्शन देने के लिये, या दूसरे शिष्य का ध्यान रखने के लिये या कलीसिया में सेवा करने के लिये; इन बातों के लिये आप बहाना बनाते हो?

इस प्रकार का त्यागपूर्ण जीवन जी कर पौलूस मसीह से किस चीज़ की अपेक्षा कर रहा था? 2*तिमु.* 4:8।

उसको इतना आत्मविश्वास था कि यीशु स्वर्ग में उसका इन्तज़ार कर रहे हैं उसे धार्मिक्ता का मुकुट देने के लिये। पौलूस का आत्मविश्वास इस बात में भी है कि वही यीशु वही मुकुट उन सभी को भी देगा जो उसके आने की बाट जोह रहे हैं।

क्या आप मुकुट पाना चाहते हैं? परमेश्वर के हाथों उस मुकुट को पाने के लिये क्या करना होगा?
यीशु के आने की बाट जोहना-सिर्फ विश्वास काफी नहीं-संसार में कई लोग हैं जो यीशु पर विश्वास करते हैं लेकिन जो उसके आने का इन्तज़ार कर रहे हैं वो थोड़े ही हैं। आप इनमें से कौन हैं? यीशु का इन्तज़ार करने का अर्थ है कि उससे ऐसे प्रेम करना जैसे एक लड़की मंगनी के बाद शादी के दिन का इन्तज़ार करती है कि उसके बाद वो सारी उम्र अपने प्यार के साथ बिता सके। इसीलिये पवित्र-शास्त्र यीशु के साथ हमारे रिश्ते को दुल्हा और दुल्हन के रूप में बयान करता है। जब हमने बप्तिस्मा लिया याने हमने यीशु से मंगनी कीया। विवाह होना अभी बाकि है।

प्रकाशितवाक्य 19:6-8

न्याय के दिन जब यीशु वापस आएंगे, मेमने का विवाह होगा। तब तक हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम अपने आपको एक ऐसे दुल्हन की तरह सजाए रखें जो राजाओं के राजा के लायक हो।

क्या आप स्वयं को इस तरह तैयार कर रहे हैं? याद रहे यीशु केवल उनको ही उद्धार देने आ रहे हैं जो उसके आने का इन्तज़ार कर रहे हैं। (यही सन्देश *इब्रानियों* 9:17-18 में भी है)
आओ हम याद रखें कि यीशु स्वर्ग में हम सभी को धार्मिक्ता का मुकुट देने को तैयार हैं। आओ हम उसे पाने का मौका न खोएं। वरन् यीशु के लिये एक सच्चा, निष्कपट और पूरे मन से प्रेम रखें और उस प्रेम को साबित करने के लिये हमारे उद्धारकर्ता और यीशु के लिये पूरा जीवन देके अपने आपको एक अर्घ के समान उंडेल दें-और इन बातों के द्वारा हम उतावले होकर उस अद्‌भुत आशिष का इन्तज़ार करें। आओ हम यह याद रखते हुए कि यीशु कभी भी आ सकते हैं हम अपने आपको हर पल तैयार करें और सिर्फ वो ही करें जो आने पर उनको भाएगा।
आओ हमारे आस-पास के लोगों को भी हम उस दिन और उस मुकुट के लिये तैयार करें।